

ग्राम पंचायत-सुनाया, विकासखण्ड-कोंच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या

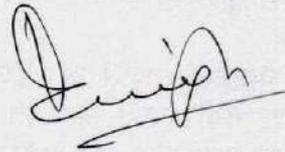
दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-कोंच के ग्राम पंचायत-सुनाया में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्रीमती प्रतिभा शाल्या, खण्ड विकास अधिकारी, कोंच
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
- 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 4- श्री अरुण कुमार, ए0 एस0 ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, सुनाया
- 6- सुश्री पूनम राजपूत, ग्राम विकास अधिकारी, सुनाया
- 7- श्री योगेन्द्र कुमार, ग्राम प्रधान, सुनाया
- 8- श्री मनोज कुमार, गोपालक
- 9- श्री भगवान दास, गोपालक

1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2019 से संचालित होना सूचित किया गया। इसे स्थापित करने के लिये ग्राम पंचायत से भूमि उपलब्ध करायी गयी है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 1200 वर्ग मीटर है। यह गोवंश-आश्रय-स्थल आबादी युक्त इलाके में स्थित है। इसके बगल में तालाब एवं पास में प्राथमिक विद्यालय स्थित है, परंतु आसपास अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। पूरे परिसर में पडजा बिछा है। निरीक्षण के समय पूरे परिसर में गोबर का ढेर पड़ा पाया गया, जिससे परिसर बहुत ही खराब स्थिति में पाया गया, जिसे साफ किया जा रहा है। वर्तमान में 02 गोपालक कार्यरत हैं, जिनका वेतन लगभग रू0 6000/- प्रतिमाह है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 08 नर, 40 मादा, 07 बछड़े व 10 बछिया, कुल 65 गोवंश अभिलेखों में दर्ज हैं। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में दूधारू गाय नहीं है। कोई भी गोवंश स्वयं सेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध नहीं कराया गया है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत गोवंश पंजिका का रख रखाव माह अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसमें 65 गोवंशों का संरक्षित होना पाया गया। निरीक्षण के दौरान किसी भी गोवंश की मृत्यु की सूचना नहीं दी गयी और न ही कोई पंचनामा प्रस्तुत किया गया, जिससे गोवंशों की मृत्यु की पुष्टि की जा सके।
2. पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका प्रस्तुत की गयी, जिसमें 64 गोवंशों की प्रविष्टि दर्ज पायी गयी। प्रस्तुत पंजिका दिनांकरहित व हस्ताक्षररहित है, जो अधूरी व त्रुटिपूर्ण है, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह पंजिका तथ्यों को देखे बिना तथा निरीक्षण से तत्काल पूर्व बनाई गई है। इस सन्दर्भ में उपस्थित पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया जा सका। बताया गया कि दिनांक 06.09.2023 को डी-वार्मिंग तथा दिनांक 10.09.2023 को एल0एस0डी0 टीकाकरण किया गया है, परन्तु टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी, जिससे गोवंशों के उपचार व टीकाकरण का पता लगाया जा सके। पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा मानकों के अनुसार गोवंश का उपचार एवं टीकाकरण किया जाना चाहिए, जिससे उनके स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल असर न हो।
3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 01 टिन-शेड (12 मी0 × 8 मी0) बना हैं, जिसके बीचो-बीच चरनी (8.46 मी0 × 1.46 मी0) स्थित है जिससे सभी गोवंशों द्वारा दोनों तरफ से चारा खाया जा सकता है। परिसर के अन्दर कोई कक्ष स्थित नहीं है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंश के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं है। टिन-शेड के बगल में मूत्र व अपशिष्ट जल निकासी व सोकपिट की व्यवस्था पायी गयी। गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारित करने से इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम होगा।
4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये एक सबमर्सिबिल पम्प व एक पक्की हौज (4.46 मी0 × 1.46 मी0)की व्यवस्था पाई गयी। परंतु जल की निकासी के लिए कोई स्थायी व्यवस्था नहीं की गई है, जिससे परिसर में जलभराव व प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है। गोवंशों को नहलाने के सम्बन्ध में कोई भी संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जा सका। स्नान के अभाव में गोवंशों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड रहा है, जो निन्दनीय व सोचनीय है।



5. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 02 कम्पोस्ट पिट (एक परिसर के अन्दर व एक बाहर) (प्रत्येक 3.04 मी0 × 1.52 मी0) स्थित है, किन्तु परिसर की स्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि निरीक्षण की सूचना मिलने पर ही सफाई प्रारम्भ की गयी है। निरीक्षण के समय परिसर के अन्दर स्थित कम्पोस्ट पिट में पुराना सूखा गोबर पहले से व ताजा गोबर भी उसी में डाला जा रहा है तथा परिसर के बाहर स्थित कम्पोस्ट पिट की कोई देखभाल नहीं की जा रही है, जो मौके पर घास से भरा है। परिसर में कोई वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र एवं गोबर के रख-रखाव की कोई अन्य व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक-02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। गोवंश-आश्रय-स्थल की आय में वृद्धि के लिए कम्पोस्टिंग की व्यवस्था की जा सकती है, जिसमें गड्ढे बनाकर गोबर एवं मूत्र डालकर कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है, जिससे तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी, परन्तु इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।
6. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुये पशुओं का भरण पोषण किया जाता है। निरीक्षण के समय अधिकांश गोवंश अस्वस्थ दिखे तथा कुछ स्वस्थ दिखे। ऐसा प्रतीत होता है कि गोवंशों को उचित मात्रा में आहार नहीं दिया जा रहा है और न उनकी सही देखभाल की जा रही है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में परिसर के बाहर एक भूसा भण्डारण कक्ष (10 मी0 × 6 मी0) स्थित है, जिसमें भूसे की जगह चारा मशीन व 06 ट्री-गार्ड रखे पाये गये। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि भूसे का भण्डारण गोवंश-आश्रय-स्थल से कुछ दूर किया जाता है, परन्तु तात्कालिक जांच के दौरान यह पाया गया कि कथित भूसा भण्डारण कक्ष के आगे अत्यधिक जलभराव है, जहां पहुँच पाना सामान्य रूप से संभव नहीं है, जो सोचनीय है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत भूसा पंजिका में दिनांक-25.09.2023 को 10.59 कुंतल भूसे का भण्डारित होना दर्ज पाया गया है। भूसा पंजिका के अनुसार, गोवंशों को प्रतिदिन 2.33 कुंतल भूसा व 1.50 हरा चारा दिया जाता है। निरीक्षण के समय न तो नैपियर घास के बारे में सूचित किया गया और न ही आस-पास कहीं भी नैपियर घास पायी गयी। चारा काटने की मशीन तथा गोबर की ढुलाई के लिए टैले आदि की व्यवस्था पाई गई।
7. कैश बुक पंजिका व गोवंश अनुदान निधि खाता प्रस्तुत किया गया, जिसके अवलोकन से यह पाया गया कि माह अगस्त, 2023 में रू0 3,30,406/- की धनराशि पशुधन विभाग से प्राप्त हुई है, जिसमें रू0 2,07,223/- का व्यय किया गया है तथा रू0 1,23,183/- शेष बचा है। उपरोक्त पंजिकाओं का रख-रखाव व प्रविष्टियां नियमानुसार नहीं की गई हैं। ग्राम विकास अधिकारी, पशु चिकित्सा अधिकारी एवं खण्ड विकास अधिकारी से अपेक्षा है कि उचित प्रारूप में उपरोक्त पंजिकाओं का रख-रखाव व्यवस्थित ढंग से व नियमानुसार किया जाये, जिससे गोवंश-आश्रय-स्थल का प्रबन्धन और भी अच्छे तरीके से किया जा सकता है।
8. खण्ड विकास अधिकारी द्वारा बताया गया कि 03 माह पूर्व में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया था, परन्तु मौके पर निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी, जिससे उनके वक्तव्य की पुष्टि की जा सके। निरीक्षण पंजिका गोवंश-आश्रय-स्थल पर कार्यरत गोपालको के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित किया जाना चाहिए, तथा यह भी सुनिश्चित करना चाहिये कि उनके द्वारा जो सुझाव दिये गये हैं उनका पालन हो रहा है या नहीं, अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
9. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कोई वृक्षारोपण नहीं किया गया है। अत्यधिक गंदगी होने के कारण वर्तमान में वृक्षारोपण किया जाना असंभव प्रतीत होता है। परिसर की स्थिति को सुधार कर उचित स्थान में वृक्षारोपण किया जाना चाहिए, जिससे गोवंशों को गर्मी व धूप से बचाया जा सकेगा तथा यह पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी उपयोगी होगा। परिसर में रोशनी की व्यवस्था नहीं पायी गई।
10. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का रख-रखाव एवं प्रबंधन अत्यन्त अव्यवस्थित व असंतोषजनक है, जिसमें सुधार की अति आवश्यकता है। समस्त अधिकारियों द्वारा अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन किया जाना चाहिए।



(एस0वी0एस0 राठौर)

अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन0जी0टी0)

उत्तर प्रदेश

1372
ग्राम पंचायत-सुनाया, विकासखण्ड-कांच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



1373
ग्राम पंचायत-सुनाया, विकासखण्ड-कोब, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



1374
ग्राम पंचायत-सुनाया, विकासखण्ड-काँच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



1375

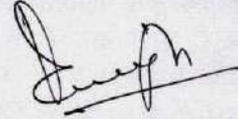
ग्राम पंचायत-नरी, विकासखण्ड-कोंच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या

दिनांक 26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-कोंच के ग्राम पंचायत-नरी में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्रीमती प्रतिभा शाल्या, खण्ड विकास अधिकारी, कोंच
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
- 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 4- श्री अरुण कुमार, ए0 एस0 ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, नरी
- 6- श्री अनुज गुप्ता, ग्राम विकास अधिकारी, नरी
- 7- श्री सिद्धान्त, ग्राम प्रधान, नरी
- 8- श्री कल्याण, गोपालक
- 9- श्री अनिल, गोपालक

1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2022 से संचालित होना सूचित किया गया। इसे स्थापित करने के लिये ग्राम सभा से भूमि उपलब्ध करायी गयी है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 1600 वर्ग मीटर है। परिसर के चारों तरफ तारों का घिराव है तथा मुख्य द्वार पर गेट लगा हुआ है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में गोबरयुक्त जलभराव के कारण अत्यधिक गंदगी पायी गयी। परिसर के निकट एक तालाब स्थित है, परंतु आसपास आबादी/विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। वर्तमान में 02 गोपालक कार्यरत हैं, जिनका वेतन रू0 6000/- प्रतिमाह है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 19 नर, 44 मादा, 12 बछड़े व 10 बछिया, कुल 85 गोवंश अभिलेखों में दर्ज हैं तथा लगभग 07-08 दूधारू गोवंशों का होना बताया गया। कोई भी गोवंश स्वयंसेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध नहीं कराया गया है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत गोवंश पंजिका का रख-रखाव माह अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसमें सभी 85 गोवंश संरक्षित पाये गये। प्रस्तुत मृत्यु पंजिका के अनुसार माह जनवरी, 2023 से माह अगस्त, 2023 तक 09 गोवंशों (दिनांक- 07.01.2023 को एक बछड़ा, 28.01.2023 को दो मादा, 17.02.2023 को एक नर, 03.07.2023 को एक बछड़ा, 08.07.2023 को एक नर 26.07.2023 को एक बछड़ा, 05.08.2023 को एक नर व 07.08.2023 को एक बछिया) के बीमार होने के कारण मृत होना बताया गया है, जिसके टैग नम्बर अंकित हैं, परंतु मृत्यु का पंचनामा प्रस्तुत नहीं किया गया। उपस्थित ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि पिछले सर्दी में 04 गोवंशों की मृत्यु हुई है, जिसका सम्बन्धित अधिकारी द्वारा कोई विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया।
2. पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी और न ही उपस्थित किसी गोवंश में टैगिंग पायी गयी। जिससे यह प्रतीत होता है कि टैगिंग पंजिका बनायी ही नहीं गयी है, जिसका पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया जा सका। पूछे जाने पर उपस्थित गोपालको द्वारा बताया गया कि वह पशु चिकित्सा अधिकारी को नहीं पहचानते, क्योंकि वह कभी स्थल पर आये ही नहीं। पशु चिकित्साधिकारी द्वारा बताया गया कि दिनांक-04.09.2023 एल0एस0डी0 टीकाकरण व दिनांक-06.09.2023 को डी-वार्मिंग की गयी है। प्रस्तुत टीकाकरण पंजिका में प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण पायी गयी, जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस पंजिका को निरीक्षण के तत्काल पूर्व तैयार किया गया है। पशु चिकित्सा अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी द्वारा मानकों के अनुसार गोवंश का उपचार एवं टीकाकरण किया जाना चाहिए, जिससे उनके स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल असर न हो।
3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 02 टिन-शेड (प्रत्येक 12 मी0 × 8 मी0) बने हैं, जिसे चारों तरफ से टिन की चादरों से घेरा गया है, तथा पड़जायुक्त है। दोनों टिन-शेड के बीचों-बीच चरनी (प्रत्येक 10 मी0 × 1 मी0) स्थित है, जिससे गोवंशों द्वारा दोनों तरफ से चारा खाया जा सकता है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंश के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं है। टिन-शेड के बगल में मूत्र व अपशिष्ट जल निकासी की भी कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। टिन-शेड तथा परिसर में अत्यधिक गोबर का जमाव पाया गया, जिससे गोवंशों को परिसर में चलने-घूमने से समस्या से जूझना पड़ता है। गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारित करने से इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम होगा एवं गोवंशों को भी उचित वातावरण में रहने का लाभ होगा।
4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये एक सबमर्सिबिल एवं हैन्डपम्प लगा हुआ है तथा 02 पक्की हौज (प्रत्येक 4 मी0 × 2 मी0) बनी है। जल के निस्तारण के लिये कोई नाली व सोकपिट नहीं कराया गया है, जिससे जल प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है। परिसर में उपस्थित गोवंशों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि गोवंशों को कभी नहलाया नहीं गया, जो निन्दनीय व सोचनीय है।

5. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कोई कम्पोस्ट पिट नहीं है, जिसके कारण गोबर पूरे परिसर में फैला हुआ है। परिसर में कोई कम्पोस्टिंग, वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र एवं गोबर के रख-रखाव व विक्रय की कोई अन्य व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक-02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। गोवंश-आश्रय-स्थल की आय में वृद्धि के लिए कम्पोस्ट खाद तैयार की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिसमें गड़ढे बनाकर गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल डालकर कम्पोस्टिंग की जा सकती है, जिससे तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी। इस दिशा में कोई भी प्रयास ही नहीं किया गया है।
6. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुये पशुओं का भरण पोषण किया जाता है। निरीक्षण के समय लगभग अधिकांश गोवंश अस्वस्थ दिखे, जिससे प्रतीत होता है कि गोवंशों को उचित आहार नहीं दिया जा रहा है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कहीं भी भूसा भण्डारण कक्ष नहीं पाया गया, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि भूसे का भण्डारण नहीं किया जा रहा है, परंतु प्रस्तुत भूसा पंजिका में माह अप्रैल, 2023 से प्रविष्टियां दर्ज की गयी है, जिसमें दिनांक-21.09.2023 को 3.05 कुंतल भूसा एवं 1.50 कुंतल हरा चारा प्रतिदिन गोवंशों को दिया जाता है। प्रस्तुत क्रय पंजिका के अनुसार, भूसे की आपूर्ति 'राजकुमार ट्रेडर्स', 'शिवनाथ कृषि यंत्र', 'राजपूत ट्रेडर्स' एवं 'पीताम्बरा ट्रेडर्स' से रू0 835/- प्रति कुंतल की दर से समय-समय पर की जाती है। निरीक्षण के समय न तो नैपियर घास के विषय में सूचित किया गया और न ही आस पास कहीं भी नैपियर घास पायी गयी। गोवंश-आश्रय-स्थल पर चारा काटने की मशीन तथा ढुलाई के लिए टेले आदि की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई। चरनी में भी हरा चारा मिश्रित भूसा नहीं पाया गया।
7. ग्राम विकास अधिकारी द्वारा कैंश बुक पंजिका का रख-रखाव माह जून, 2023 से किया जा रहा है, जिसके अनुसार दिनांक-01.09.2023 को रू0 83,934/- गोवंश अनुदान निधि खाता में शेष पाया गया। खाताबही पंजिका का रख-रखाव माह अप्रैल, 2022 से किया जा रहा है, जिसमें आय-व्यय की कई प्रविष्टियां दर्ज की गयी हैं, जो ग्राम विकास अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित है। सुपुर्दगीकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी। यदि उचित प्रारूप में उपरोक्त पंजिकाओं का रख रखाव किया जाये, तो व्यवस्थित ढंग से प्रबन्धन किया जा सकता है।
8. निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी और न ही किसी निरीक्षण के बारे में सूचित किया गया। निरीक्षण पंजिका गोवंश-आश्रय-स्थल पर कार्यरत गोपालको के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित किया जाना चाहिए, तथा यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जो सुझाव पंजिका में दिये गये हैं उनका पालन हो रहा है या नहीं। अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
9. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 03 ट्री-गार्ड है, जिसमें कोई वृक्षारोपण नहीं किया गया है। जबकि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में वृक्षारोपण हेतु पर्याप्त भूमि उपलब्ध है, परंतु गोबरयुक्त जलभराव की अत्यंत गंभीर समस्या होने के कारण वर्तमान में वृक्षारोपण किया जाना असंभव प्रतीत होता है। परिसर में गोबरयुक्त जलभराव की स्थिति को सुधारा जाना चाहिए तथा उचित वृक्षारोपण किया जाना चाहिए, जिससे गोवंशों को गर्मी व धूप से बचाया जा सके तथा यह पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी उपयोगी होगा। वस्तुतः इस गोवंश-आश्रय-स्थल का चयन ही त्रुटिपूर्ण रूप से जल जमाव वाले क्षेत्र में किया गया है। परिसर में रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई।
10. ग्रामवासियों द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों की शिकायत की गयी कि वे कभी भी इस गोवंश-आश्रय-स्थल में नहीं आये हैं, जिससे गोवंशों की ऐसी दुर्दशा है। इस सन्दर्भ में उपस्थित ग्राम विकास अधिकारी, पशु चिकित्सा अधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया जा सका।
11. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का रख रखाव अत्यंत अव्यवस्थित व असंतोषजनक है, वरिष्ठ अधिकारियों से भी समय समय पर निरीक्षण करने एवं मार्ग दर्शन करने की अत्यन्त आवश्यकता है।



(एस0वी0एस0 राठौर)

अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन0जी0टी0)

उत्तर प्रदेश

1377
ग्राम पंचायत-नरी, विकासखण्ड-कोण्ड, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल

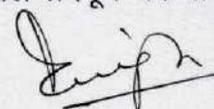


**ग्राम पंचायत-जमरोही कलों, विकासखण्ड-कोंच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या**

दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-कोंच के ग्राम पंचायत-जमरोही कलों में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्रीमती प्रतिभा शाल्या, खण्ड विकास अधिकारी, कोंच
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
- 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 4- श्री अरुण कुमार, ए0 एस0 ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, जमरोही कलों
- 6- सुश्री शिल्पी राजपूत, ग्राम विकास अधिकारी, जमरोही कलों
- 7- श्री राकेश कुमार, प्रतिनिधि ग्राम प्रधान (श्रीमती सुनीता, ग्राम प्रधान, जमरोही कलों)
- 8- श्री जयपाल, गोपालक
- 9- श्री टीकाराम, गोपालक

1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2021 से संचालित होना सूचित किया गया। इसे स्थापित करने के लिये ग्राम पंचायत से भूमि उपलब्ध करायी गयी है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 450 वर्ग मी0 है। मौके पर इस गोवंश-आश्रय-स्थल को जाने वाले रास्तों पर जलभराव के कारण स्थलीय निरीक्षण दूर से करना पड़ा। इस गोवंश-आश्रय-स्थल को देख पाना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि परिसर तक जाने वाले रास्ते में अत्यधिक जलभराव है। जिसके कारण वहां पर उपस्थित गोवंशों को जलभराव की स्थिति में खड़े रहना पड़ता है, जिससे पानी उनके घुटनों तक है, जो कि बहुत ही दर्दनाक स्थिति है। यह गोवंश-आश्रय-स्थल आबादी युक्त इलाके में स्थित है, परंतु इसके आस-पास विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। वर्तमान में 02 गोपालक कार्यरत है, जिनका वेतन रू0 6000/- प्रतिमाह है। उपस्थित गोवंशों को देख पाना अपने आप में विषम स्थिति है, जिससे गोवंशों की गणना नहीं की जा सकती। पास के एक घर के खुले हिस्से से दूर से इस गोवंश-आश्रय-स्थल का अवलोकन किया गया। बताया गया कि वर्तमान में इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 05 नर, 11 मादा, 05 बछड़े व 04 बछिया, कुल 25 गोवंश अभिलेखों में दर्ज हैं। कोई भी गोवंश स्वयं सेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध नहीं कराया गया है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत गोवंश पंजिका का रख-रखाव माह- अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसमें सभी 25 गोवंशों का संरक्षित होना पाया गया। मृत्यु पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई जिससे गोवंशों के मृत्यु की पुष्टि की जा सके।
2. पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी। टैगिंग पंजिका प्रस्तुत की गयी जिसके अनुसार 40 गोवंशों की टैगिंग की जा चुकी है जिसमें टैगिंग का दिनांक उल्लिखित नहीं है, जो अधूरी व त्रुटिपूर्ण है, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह पंजिका तथ्यों को देखे बिना तथा निरीक्षण से तत्काल पूर्व बनाई गई है। इस सन्दर्भ उपस्थित पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया जा सका। गोपालको द्वारा बताया गया कि वह पशु चिकित्सा अधिकारी को नहीं पहचानते, क्योंकि वह कभी स्थल पर आये ही नहीं। अत्यधिक जलभराव के कारण न ही यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सभी को नियमानुसार टैगिंग की गयी है अथवा नहीं। पशु चिकित्सा अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी से अपेक्षा है कि मानकों के अनुसार गोवंश का उपचार एवं टीकाकरण करें। जिससे उनके स्वास्थ्य पर कोई असर न हो।
3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 01 टिन-शेड (11 मी0 × 8 मी0) बना हैं, जिसके नीचे सभी गोवंश फंसे हुये हैं। बताया गया कि टिन-शेड के बीचो-बीच एक चरनी (8.46 मी0 × 1.46 मी0) सम्पूर्ण परिसर में जलभराव होने के कारण इस गोवंश-आश्रय-स्थल की स्थिति पास से नहीं देखी जा सकी। गोबर व मूत्र भी वर्षा जल/जलभराव में मिल रहा है, यह स्थिति प्रत्येक दृष्टि से सोचनीय है। बताया गया कि बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंश के लिए अलग से कक्ष की कोई व्यवस्था नहीं है। जलभराव के कारण टिन-शेड के बगल में मूत्र एवं अपशिष्ट जल के निकासी की भी व्यवस्था देखी नहीं जा सकी।
4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये सबमर्सिबिल व पक्की हौज (4.46 मी0 × 1.50 मी0) की कोई व्यवस्था नहीं बताई गयी। परिसर व परिसर के बाहर जलभराव व जल प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है।



- परिसर में उपस्थित गोवंशों को नहलाने की बात तो दूर, उन्हें कभी देखने कोई गोपालक व संबंधित अधिकारीगण नहीं जाते हैं, जिससे गोवंशों की हालत बहुत ही नाजुक व दुर्लभ है, ऐसा प्रतीत होता है कि गोवंशों को कभी नहलाया ही नहीं गया, जो निन्दनीय व सोचनीय है।
5. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुये पशुओं का भरण पोषण किया जाता है। निरीक्षण के समय गोवंशों तक पहुँचना ही अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती है, जिससे गोवंशों की असहनीय व दर्दनाक स्थिति का पता लगाया जा सके। स्थिति देखकर प्रतीत होता है कि गोवंशों को कभी उचित आहार दिया गया हो। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कहीं भी भूसा भण्डारण कक्ष नहीं पाया गया जिससे यह प्रदर्शित हो सके कि भूसे का भण्डारण किया जा रहा है, परंतु ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत भूसा पंजिका में माह अप्रैल, 2023 से प्रविष्टियां दर्ज की गयी हैं, जिसमें दिनांक-26.09.2023 को कुल 16 कुन्तल भूसे का भण्डारण पंजिका में दर्ज पाया गया, जिसमें से 3.0 कुन्तल भूसा प्रतिदिन गोवंशों को तथा शेष 13 कुन्तल भूसा भण्डारित किया है। निरीक्षण के समय न तो नैपियर घास के विषय में सूचित किया गया और न ही आस पास कहीं भी नैपियर घास पायी गयी। चारा काटने की मशीन तथा ढुलाई के लिए ठेले आदि की व्यवस्था नहीं पाई गई। मात्र 25 गोवंशों में प्रतिदिन 3.0 कुन्तल भूसा दिया जाना लेश मात्र विश्वसनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि भूसा की ज्यादा निकासी अन्य लाभ हेतु दर्शायी जा रही है।
 6. ग्राम विकास अधिकारी द्वारा कैश बुक पंजिका व सुपुर्दीकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी। यदि उचित प्रारूप में उपरोक्त पंजिकाओं का रख रखाव किया जाये, तो व्यवस्थित तरीके से प्रबन्धन किया जा सकता है।
 7. खण्ड विकास अधिकारी द्वारा बताया गया कि पूर्व में उनके द्वारा निरीक्षण किया गया था, परन्तु मौके पर निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी, जिससे उनके वक्तव्य की पुष्टि की जा सके। निरीक्षण पंजिका गोवंश-आश्रय-स्थल पर कार्यरत गोपालकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित किया जाना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके द्वारा जो सुझाव दिये गये हैं उनका पालन हो रहा है या नहीं, अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
 8. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कोई वृक्षारोपण नहीं किया गया है। अत्यधिक जलभराव की अत्यंत गंभीर समस्या होने के कारण वर्तमान में वृक्षारोपण किया जाना असंभव प्रतीत होता है। खण्ड विकास अधिकारी एवं ग्राम विकास अधिकारी से अपेक्षा है कि परिसर में जलभराव की स्थिति को दूर कर गोवंशों की देखभाल उचित वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। जिससे गोवंशों को गर्मी व धूप से बचाया जा सके तथा यह पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से उपयोगी होगा।
 9. ग्रामवासियों द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों की शिकायत की गयी कि वह कभी भी इस गोवंश-आश्रय-स्थल में नहीं आये हैं, जिससे परिसर व गोवंशों की ऐसी दुर्दशा है। इस सन्दर्भ में उपस्थित ग्राम विकास अधिकारी, पशु चिकित्सा अधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी कोई उत्तर नहीं दे पाये।
 10. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का चयन व रख-रखाव बहुत ही अव्यवस्थित, असंतोषजनक व गंभीर है, जिसमें सुधार की अत्यंत आवश्यकता है। उपस्थित समस्त अधिकारियों द्वारा अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन किया जाना चाहिए।



(एस0वी0एस0 राठौर)
अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन0जी0टी0)
उत्तर प्रदेश

1380
ग्राम पंचायत-जमरोही कलॉ, विकासखण्ड-कांच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल

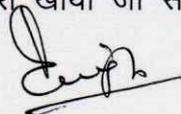


**ग्राम पंचायत-कौशलपुर विकास खण्ड-कोंच जनपद जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या**

दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन विकासखण्ड-कोंच के ग्राम पंचायत-कौशलपुर में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

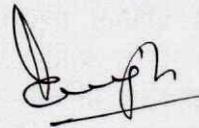
- 1- श्रीमती प्रतिभा शाल्या, खण्ड विकास अधिकारी, कोंच
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
- 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 4- श्री अरुण कुमार, ए0एस0ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, कौशलपुर
- 6- सुश्री शिल्पी राजपूत, ग्राम विकास अधिकारी, कौशलपुर
- 7- श्री राम कुमार, ग्राम प्रधान, कौशलपुर
- 8- श्री भवानी शंकर, गोपालक
- 9- श्री भागीरथ, गोपालक

1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2019 से संचालित होना सूचित किया गया, इसे स्थापित करने के लिये ग्राम पंचायत से भूमि उपलब्ध करायी गयी है, जिसका क्षेत्रफल 2000 वर्ग मी0 है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल को चारों तरफ से कटीले तारों व टीन की चादरों से घेरा गया है तथा मुख्य द्वार पर गेट लगा हुआ है। परिसर से सटा हुआ एक सार्वजनिक शौचालय परिसर के बाहर स्थित है। पूरे परिसर में कच्चा फर्श है तथा अत्यधिक जलभराव की स्थिति है, जिससे गोवंशों द्वारा बड़ी ही मुश्किलों से आवागमन किया जाता है, जो सोचनीय है। परिसर की वर्तमान स्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि निरीक्षण की सूचना पर जल्दीबाजी में सफाई कराई जा रही है। गोवंश-आश्रय-स्थल के आस-पास आबादी/विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। वर्तमान में 02 गोपालक कार्यरत हैं, जिनका वेतन रूपया 6000/- प्रतिमाह है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 15 नर, 35 मादा, 10 बछड़े एवं 10 बछिया, कुल 70 गोवंश अभिलेखों में दर्ज हैं। बताया गया कि कोई भी दूधारू गोवंश नहीं है और न ही कोई भी गोवंश स्वयंसेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध कराया गया है। उपस्थित ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि निरीक्षण की सूचना मिलते ही कुछ गोवंश गॉव से पकड़कर लाये गये हैं और उनके गले में रस्सी पड़ी हुई है तथा टैग नहीं हैं, जो वर्तमान में परिसर में मौजूद है, जिससे प्रतीत होता है कि ग्रामवासियों के कथन सत्य है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा गोवंश पंजिका में तथा पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका में किसी भी गोवंश की मृत्यु का होना नहीं पाया गया है और न ही इस संदर्भ में कोई पंचनामा प्रस्तुत किया गया, जिससे गोवंश की मृत्यु होने की पुष्टि की जा सके।
2. टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, जिस पर पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सका। टीकाकरण पंजिका के संबंध में पशु चिकित्सा अधिकारी को पूछे जाने पर ग्रामवासियों द्वारा उन्हें पहचाना ही नहीं गया, बताया गया कि पशु चिकित्सा अधिकारी कभी गोवंश-आश्रय-स्थल पर आये ही नहीं। पशुधन प्रसार अधिकारी (डा0 प्रदीप कुमार बघेल) को बुलाया गया, परंतु उन्होंने निरीक्षण स्थल पर आने से मना किया, जिस पर उपस्थित खण्ड विकास अधिकारी द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया जा सका। जिससे यह स्वतः ही परिलक्षित है कि सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन नहीं किया जा रहा है। बताया गया कि दिनांक 12.09.2022 को एल0एस0डी0 टीकाकरण व दिनांक 13.09.2022 को डी-वार्मिंग की गई है, परंतु इस संदर्भ में चिकित्सा/टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, जिससे टीकाकरण होने की पुष्टि की जा सके। निरीक्षण के समय दो गोवंश चोटिल पाये गये, जिन पर पट्टी बाँधी गयी है। पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका मानकों के अनुसार तैयार की जानी चाहिए, जिसमें गोवंशों का उपचार एवं टीकाकरण सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रविष्टियां नियमानुसार अंकित हो।
3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक पंडजायुक्त टिन-शेड (11 मी0 x 8 मी0) हैं, जिसमें मात्र 40-50 गोवंशों को संरक्षित किया जा सकता है। टिन-शेड के बीचो-बीच एक चरनी (8.46 मी0 x 1.46 मी0) स्थित है, जिससे गोवंशों द्वारा दोनों तरफ से आसानी से चारा खाया जा सकता है। टिन-शेड के बगल में मूत्र व



अपशिष्ट जल निकासी की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, न तो सोकपिट का निर्माण किया जा रहा है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंशों के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं है। टिन-शेड तथा परिसर की साफ सफाई अच्छी नहीं थी, मौके पर अत्यधिक जलभराव पाया गया, जिससे गोवंशों को बड़ी ही मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। यदि परिसर एवं टिन-शेड के किनारे गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारित किया जाये, तो इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम होगा।

4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये मात्र एक पक्की हौज (4.46 मी० x 1.50 मी०) है। जल के निस्तारण के लिये कोई नाली नहीं बनी है, जिससे जलभराव व जल प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है। गोवंशों को नहलाने की कोई सूचना नहीं दी गई।
5. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक कम्पोस्ट पिट (3.04 मी० x 1.52 मी०) बना है, जिसमें सूखा गोबर भरा पाया गया। पूरे परिसर में गोबर फैला हुआ पाया गया, जिसे निरीक्षण की सूचना पाकर साफ कराया जा रहा है। परिसर में कम्पोस्टिंग, वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र तथा गोबर एवं मूत्र के अन्य उपयोग की कोई व्यवस्था नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक- 02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल की आय वृद्धि के लिए कम्पोस्टिंग के लिये गड्ढे बनाकर उसमें गोबर एवं मूत्र की नाली जोड़कर कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है, जिससे तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी। किन्तु इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।
6. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुये पशुओं का भरण-पोषण किया जाता है, परन्तु निरीक्षण के समय अधिकांश गोवंश अस्वस्थ तथा कुछ दुर्बल दिखे। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें समुचित आहार नहीं दिया जा रहा है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक भूसा भण्डारण कक्ष (10 मी० x 6 मी०) है, जिसे निरीक्षण के समय खाली पाया गया। बताया गया कि जल-रिसाव की समस्या होने के कारण भूसा परिसर के बजाय एक ग्रामवासी (श्री ननकऊ) के घर रखा जाता है। गोवंशों का स्वास्थ्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी देख-रेख, आहार व अन्य व्यवस्थाओं में पूर्णतया लापरवाही की गई है, जो अत्यंत सोचनीय है। बताया गया कि भूसा पंजिका का रख-रखाव माह-अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसके अनुसार गोवंशों को प्रतिदिन 3.2 कुंतल भूसा व 2.0 कुंतल हरा चारा दिया जाता है। सूचित किया गया कि नैपियर घास की बुआई प्रधान के खेत में की जाती है। गोवंश-आश्रय-स्थल पर ढुलाई के लिए दो ठेले पाए गए, परन्तु चारा काटने की मशीन उपलब्ध नहीं है।
7. खाताबही पंजिका, उपस्थिति पंजिका तथा कैश बुक पंजिका प्रस्तुत की गयी, जिसमें दर्ज की गई प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण पायी गई। बताया गया कि इस वित्तीय वर्ष में ₹ 2,60,704/- की धनराशि ग्राम पंचायत से प्राप्त हुई है। सुपुर्दगीकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी। सम्बन्धित अधिकारी द्वारा उपरोक्त पंजिकाओं में प्रविष्टियां व्यवस्थित ढंग से व नियमानुसार उचित प्रारूप में द्वारा किया जाना चाहिए।
8. खण्ड विकास अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि उनके द्वारा पूर्व में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया था, परन्तु इस संदर्भ में कोई भी निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, जिससे सत्यता की पुष्टि की जा सके। निरीक्षण पंजिका गोपालकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित करना आवश्यक है, अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
9. निरीक्षण के समय उक्त परिसर में वृक्षारोपण नहीं पाया गया। यद्यपि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में वृक्षारोपण हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध है, जहाँ पर वृक्षारोपण किया जा सकता है। परिसर को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संबंधित अधिकारियों द्वारा विगत चार वर्षों में वृक्षारोपण के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है और न ही उन्हें गर्मी व धूप से बचाए जाने की कोई व्यवस्था पायी गई। संबंधित अधिकारी द्वारा जलभराव की समस्या को दूर करके परिसर की स्थिति को सुधारा जाना चाहिए तथा उचित स्थान पर वृक्षारोपण किया जाये, जो गोवंशों एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से उपयोगी होगा। परिसर में रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई।
10. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का रखरखाव व प्रबन्धन बहुत ही अव्यवस्थित व असंतोषजनक है, जो पर्यावरण एवं गोवंशों के स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सुधार की अति आवश्यकता है।



(एस०वी०एस० राठौर)
अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन०जी०टी०)
उत्तर प्रदेश

ग्राम पंचायत-कौशलपुर, विकासखण्ड-कौंचे, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



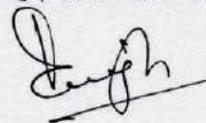
1384
ग्राम पंचायत-कौशलपुर, विकासखण्ड-कोय, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



ग्राम पंचायत-पिण्डारी, विकासखण्ड-कोंच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या

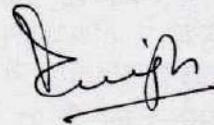
दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-कोंच के ग्राम पंचायत-पिण्डारी में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्रीमती प्रतिभा शाल्या, खण्ड विकास अधिकारी, कोंच
 - 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
 - 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
 - 4- श्री अरुण कुमार, ए0 एस0 ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
 - 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, पिण्डारी
 - 6- श्री नरेन्द्र पटेल, ग्राम विकास अधिकारी, पिण्डारी
 - 7- श्री सुरेन्द्र राजपूत, ग्राम प्रधान, पिण्डारी
 - 8- श्री ज्ञानेन्द्र, गोपालक
 - 9- श्री रवि, गोपालक
 - 10- श्री गौरव, गोपालक
1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2019 से संचालित होना सूचित किया गया, इसे स्थापित करने के लिये ग्राम पंचायत से भूमि उपलब्ध करायी गयी है। जिसका क्षेत्रफल लगभग एक एकड़ है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल को दो तरफ से तारों से तथा दो तरफ से पक्की दीवार से घेरा गया है। मुख्य द्वार पर गेट लगा हुआ है, जिसके बगल में एक ट्रांसफार्मर स्थित है। पूरे परिसर में कच्चा फर्श है तथा जलभराव की समस्या है, जिससे गोवंशों द्वारा बड़ी ही मुश्किलों से आना-जाना किया जा रहा है, जो निंदनीय व सोचनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि निरीक्षण की सूचना प्राप्त होने पर परिसर की सफाई का प्रयत्न किया गया है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल के बगल में एक भवन स्थित है, जिसमें अत्यधिक जलभराव है। यह परिसर आबादीयुक्त इलाके में स्थित है, परंतु आस-पास विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। वर्तमान में 03 गोपालक कार्यरत हैं, जिनका वेतन रूपया 6000/- प्रतिमाह है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 40 नर, 70, मादा, 06 बछड़े एवं 04 बछिया, कुल 120 गोवंश अभिलेखों में दर्ज हैं, परंतु मौके पर लगभग 70-80 गोवंश पाए गए। बताया गया कि कोई भी दूधारू मादा गोवंश नहीं है और न ही कोई भी स्वयंसेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध कराए गए हैं। उपस्थित ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि निरीक्षण की सूचना मिलते हुए गोवंश गॉव से पकड़कर लाए गए हैं और उनके गले में रस्सी पड़ी हुई है एवं उनकी टैगिंग भी नहीं है, जो वर्तमान में परिसर में मौजूद है। जिससे प्रतीत होता है कि ग्रामवासियों की बातों में सत्यता है। ग्रामवासियों द्वारा यह भी बताया गया कि पिछले शीतकाल में कुछ गोवंशों की मृत्यु हुई है, परंतु ग्राम विकास अधिकारी द्वारा गोवंश पंजिका में तथा पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका में किसी भी गोवंश की मृत्यु का होना नहीं पाया गया है और न ही इस संदर्भ में कोई पंचनामा प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे गोवंश की मृत्यु के न होने की सत्यता की पुष्टि की जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि गोवंशों की मृत्यु को छिपाया जा रहा है।
 2. पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका में दिनांक-22.05.2023 को 99 गोवंशों की टैगिंग का होना दर्ज पाया गया, परन्तु तात्कालिक गणना के अनुसार, 19 गोवंशों पर ही टैगिंग पायी गयी तथा अन्य किसी गोवंश में न तो टैगिंग और न ही कान में छेद पाया गया। टैगिंग पंजिका में दर्ज की गयी प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण पायी गयी, क्योंकि इस पंजिका में पशु चिकित्सा अधिकारी के हस्ताक्षर नहीं हैं। जिससे यह प्रतीत होता है कि यह पंजिका तथ्यों को देखें बिना तथा निरीक्षण से तत्काल पूर्व तैयार की गयी है, जिसका पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सका। बताया गया कि दिनांक-11.09.2022 को डी-वार्मिंग व दिनांक-13.09.2022 को एल0एस0डी0 टीकाकरण किया गया है, परंतु इस संदर्भ में चिकित्सा पंजिका/टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई। पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका मानकों के अनुसार तैयार की जानी चाहिए, जिसमें गोवंशों का उपचार एवं टीकाकरण सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रविष्टियां नियमानुसार अंकित हो।
 3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 01 पडंजायुक्त टिन-शेड (12.19 मी0 × 8.53 मी0) बना हैं, जिसमें मात्र 40-50 गोवंशों को संरक्षित किया जा सकता है। सर्दी से बचाव के लिए टिन-शेड को टिन की चादरों से घेरा गया है। टिन-शेड के बीचो-बीच एक चरनी (9.14 मी0 × 0.91 मी0) स्थित है, जिससे गोवंशों द्वारा दोनों तरफ से आसानी से चारा खाया जा सकता है। टिन-शेड के बगल में मूत्र एवं अपशिष्ट जल



निकासी की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है और न ही किसी सोकपिट का निर्माण किया जा रहा है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंशों के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं है। टिन-शेड तथा परिसर की सफाई अच्छी नहीं है, मौके पर गोबरयुक्त जलभराव पाया गया जिससे गोवंशों को बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि निरीक्षण की सूचना पर जल्दीबाजी में सफाई कराई जा रही है। यदि परिसर एवं टिन-शेड के किनारे गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारित किया जाये, तो इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम होगा।

4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये एक मात्र पक्की हौज (6 मी० × 1 मी०) है। जल के निस्तारण के लिये कोई नाली का निर्माण नहीं कराया गया है, जिससे जलभराव व जल प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है। गोवंशों को नहलाने की कोई सूचना नहीं दी गई।
5. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में कम्पोस्ट पिट नहीं बना है, जिससे पूरे परिसर में गोबर भरा व फैला पाया गया। परिसर में कम्पोस्टिंग वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र तथा गोबर एवं मूत्र के अन्य उपयोग की कोई व्यवस्था नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक-02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल की आय वृद्धि के लिए कम्पोस्टिंग के लिये गड़ढे बनाकर उसमें गोबर एवं मूत्र की नाली जोड़कर कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है, जिससे तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी। किन्तु इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।
6. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुये पशुओं का भरण पोषण किया जाता है, परन्तु निरीक्षण के समय अधिकांश गोवंश अस्वस्थ तथा कुछ दुर्बल दिखे। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें समुचित आहार नहीं दिया जा रहा है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक भूसा भण्डारण कक्ष (12 मी० × 9 मी०) है, जिसमें लगभग 100 कुंतल भूसा मौजूद है, जिसमें गोवंशों की संख्या के अनुसार भूसा की मात्रा काफी है। किन्तु गोवंशों का स्वास्थ्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी देख-रेख, आहार व अन्य व्यवस्थाओं में पूर्णतया लापरवाही की गई है, जो अत्यंत सोचनीय है। बताया गया कि भूसा पंजिका का रख-रखाव माह अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसके अनुसार गोवंशों को प्रतिदिन 4.4 कुंतल भूसा दिया जाता है। नैपियर घास की बुआई के बारे में सूचित नहीं किया गया और न ही निरीक्षण के समय आस-पास कहीं भी नैपियर घास पायी गयी। गोवंश-आश्रय-स्थल पर चारा काटने की मशीन व ढुलाई के लिए टैले आदि की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है।
7. लेखा पंजिका, खाताबही पंजिका तथा सुपुर्दगीकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी। इसके संदर्भ में ग्राम विकास अधिकारी द्वारा बताया गया कि रू० 4,53,150/- की धनराशि प्राप्त हुयी है, जिसमें से रू० 4,42,681/- व्यय किए गए तथा रू० 10,469/- शेष है। सम्बन्धित अधिकारी द्वारा उपरोक्त पंजिकाओं में प्रविष्टियां व्यवस्थित ढंग से व नियमानुसार उचित प्रारूप में द्वारा किया जाना चाहिए।
8. खण्ड विकास अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि उनके द्वारा पूर्व में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया था, परन्तु इस संदर्भ में कोई भी निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, जिससे सत्यता का पता लगाया जा सके। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों को निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित करना आवश्यक है एवं यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि निर्देशों का पालन हुआ भी है अथवा नहीं। अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
9. निरीक्षण के समय उक्त परिसर के अन्दर वृक्षारोपण नहीं पाया गया। यद्यपि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में वृक्षारोपण हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध है, जहाँ पर वृक्षारोपण किया जा सकता है। परिसर को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संबंधित अधिकारी द्वारा वृक्षारोपण के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है और न ही उन्हें गर्मी व धूप से बचाए जाने की कोई व्यवस्था की गई है। संबंधित अधिकारियों से अपेक्षा है कि जलभराव की समस्या को दूर करके परिसर की स्थिति को सुधारा जाना चाहिए तथा उचित स्थान पर वृक्षारोपण किया जाना चाहिए, जो गोवंशों के लिए एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से उपयोगी होगा। परिसर में रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई।
10. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का रख-रखाव एवं प्रबंधन बहुत ही अव्यवस्थित व असंतोषजनक है, जिसमें सुधार की अति आवश्यकता है।



(एस०वी०एस० राठौर)

अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन०जी०टी०)

उत्तर प्रदेश

1387
ग्राम पंचायत-पिण्डारी, विकासखण्ड-कंच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल



1388
ग्राम पंचायत-पिण्डारी, विकासखण्ड-कोच, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल

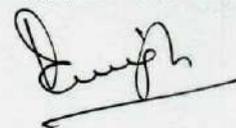


ग्राम पंचायत-भुआ, विकासखण्ड-डकोर, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल की निरीक्षण आख्या

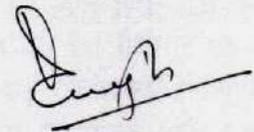
दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-डकोर के ग्राम पंचायत-भुआ में स्थित अस्थायी गोवंश-आश्रय-स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्री बृज किशोर कुशवाहा, खण्ड विकास अधिकारी, डकोर
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, भुआ
- 3- श्री अरुण कुमार, ए0एस0ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 4- डॉ0 नितिन कुमार गुप्ता, पशु चिकित्सा अधिकारी, भुआ
- 5- श्री अंकित निरंजन, ग्राम विकास अधिकारी, भुआ
- 6- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 7- श्री त्रिश्रुवन नाथ, प्रतिनिधि ग्राम प्रधान (श्रीमती उमा देवी, ग्राम प्रधान, भुआ)
- 8- श्री रामप्रसाद, गोपालक
- 9- श्री नरेन्द्र कुमार, गोपालक

1. यह गोवंश-आश्रय-स्थल वर्ष 2019 से संचालित है, इसे स्थापित करने के लिये ग्राम पंचायत से भूमि उपलब्ध करायी गयी है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 02 एकड़ है। यह परिसर चारों ओर से तारों से घिरा है तथा मुख्य द्वार पर गेट लगा हुआ है। परिसर के अंदर एक बड़ा मैदान स्थित है। परिसर की वर्तमान स्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि निरीक्षण की सूचना पर जल्दीबाजी में सफाई कराई गई है। वर्तमान में इस गोवंश में 02 गोपालक कार्यरत हैं, जिनका वेतन रूपया 6000/- प्रतिमाह है। यह गोवंश आश्रय स्थल तालाब के निकट व आबादीयुक्त इलाके में स्थित है, परंतु आस-पास विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश स्थल नहीं है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 12 नर, 61 मादा, 11 बछड़े एवं 11 बछिया, कुल 95 गोवंश अभिलेखों में दर्ज है। बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल कोई भी दुधारू गोवंश नहीं है और न ही कोई भी गोवंश स्वयंसेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध कराया गया है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा प्रस्तुत गोवंश पंजिका का रखरखाव माह अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है। जिसके अनुसार इस वर्ष में दिनांक-04.08.2023 को एक गोवंश, 01.05.2023 को दो गोवंशों, 08.07.23 को एक गोवंश, 23.08.2023 को एक गोवंश व 18.09.2023 को एक गोवंश, कुल 06 गोवंशों की मृत्यु का होना पाया गया है, जिनका पंचनामा प्रस्तुत किया गया।
2. पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा प्रस्तुत टैगिंग पंजिका में 137 गोवंशों की टैगिंग की गयी, परन्तु मौके पर सिर्फ 08-10 गोवंशों पर ही टैगिंग पायी गयी तथा अन्य किसी गोवंश में न तो टैगिंग और न ही कान में छेद पाया गया। टीकाकरण पंजिका के अनुसार, दिनांक 28.11.2022 को एफ0एम0डी0 टीकाकरण, दिनांक 14.07.2023 को एच0एस0 टीकाकरण व दिनांक 17.09.2023 को एल0एस0डी0 टीकाकरण किया गया है। टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका में दर्ज की गयी प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण पायी गयी, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह पंजिका तथ्यों को देखें बिना तथा निरीक्षण से तत्काल पूर्व तैयार की गयी है। पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैग किए गए गोवंशों की संख्या, ग्राम विकास अधिकारी द्वारा गोवंश पंजिका में दर्ज गोवंशों की संख्या के विपरीत है, जिसका पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सका। पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका मानकों के अनुसार तैयार की जानी चाहिए, जिसमें गोवंश का उपचार एवं टीकाकरण सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रविष्टियां नियमानुसार अंकित हो।
3. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में 02 टिन-शेड (प्रत्येक 12 मी0 x 8 मी0) हैं, जिसमें पड़जा बिछा है। एक टिन-शेड चारों तरफ से खुला है तथा एक टिन-शेड को पक्की चहरदीवार से घेरा गया है, जिसमें मात्र 40-50 गोवंशों को (प्रति टिन-शेड) संरक्षित किया जा सकता है। गोवंश के खाने के लिए 02 चरनी परिसर में स्थित है। एक चरनी (10 मी0 x 1 मी0) टिन-शेड के बीचों-बीच तथा दूसरी चरनी (11 मी0 x 1.5 मी0) दीवार से सटी है, जिससे गोवंशों द्वारा आसानी से चारा खाया जा सकता है। टिन-शेड की साफ-सफाई ठीक है, परन्तु इसके बगल में मूत्र व अपशिष्ट जल निकासी व सोकपिट की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंशों के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं पाई गई। यदि परिसर एवं टिन-शेड के किनारे गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारित किया जाये, तो इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम होगा।

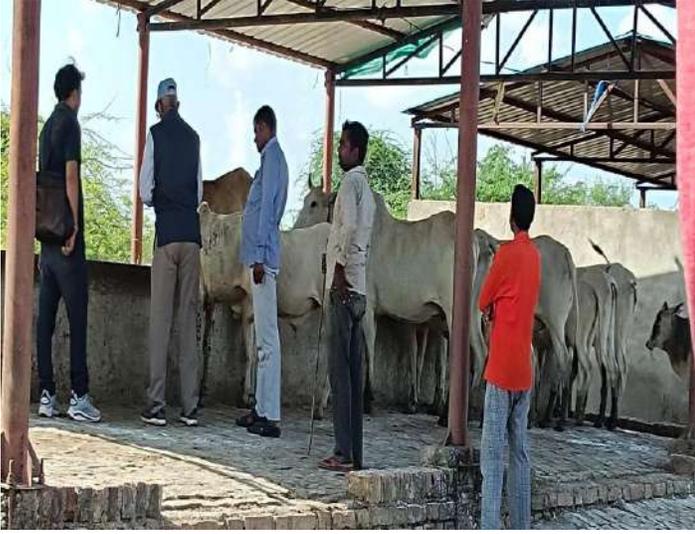


4. गोवंशो के पेयजल आपूर्ति के लिये एक सबमर्सिबल पम्प एवं एक पक्की हौज (6 मी0 x 1.5 मी0) है, जो परिसर में किनारे पर स्थित है। जल के निस्तारण के लिये कोई नाली नहीं बनी है, जिससे जलभराव व जल प्रदूषण की समस्या लगातार बनी हुई है। गोवंशो को नहलाने की कोई सूचना नहीं दी गई।
5. इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक नवनिर्मित कम्पोस्ट पिट (7 मी0 x 3 मी0) है, जो खाली है। जिसके कारण परिसर में एक किनारे गोबर का ढेर पाया गया। परिसर में वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र तथा गोबर एवं मूत्र के अन्य उपयोग की कोई व्यवस्था नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक-02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। गोवंश-आश्रय-स्थल के पास पर्याप्त खाली भूमि है। गोवंश-आश्रय-स्थल की आय वृद्धि के लिए गड्ढे बनाकर उसमें गोबर एवं मूत्र डालकर कम समय में कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है। इस प्रकार तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी, किन्तु वर्तमान में इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।
6. बताया गया कि इस गोवंश-आश्रय-स्थल में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुए पशुओं का भरण-पोषण किया जाता है। निरीक्षण के समय अधिकांश गोवंश स्वस्थ दिखें जिससे कहा जा सकता है कि गोवंशों को समुचित आहार दिया जा रहा है। इस गोवंश-आश्रय-स्थल में एक भूसा भण्डारण कक्ष (8 मी0 x 3 मी0) है, जिसमें पर्याप्त भूसा उपलब्ध है। ग्राम विकास अधिकारी द्वारा बताया गया कि भूसा रू0 824/- प्रति कुंतल की दर से क्रय किया जाता है तथा हरा चारा बलकट की भूमि से आता है। निरीक्षण के समय देखा गया कि गोवंशों को भूसा जमीन पर दिया गया है, जिस पर कमेटी द्वारा असंतुष्टि जताई गई। बताया गया कि ग्रामवासियों द्वारा भूसा दान में भी दिया जाता है, परंतु इस संदर्भ में कोई पंजिका नहीं बनाई गई है। भूसा पंजिका प्रस्तुत की गई, जिसमें माह अप्रैल, 2023 से प्रविष्टियां दर्ज की गई हैं, जिसके अनुसार दिनांक-25.09.2023 में 3.34 कुन्तल भूसा प्रतिदिन के हिसाब से गोवंशों को दिया जाता है। बताया गया कि नैपियर घास की बुआई प्रधान के खेत में की जाती है, परन्तु परिसर व चरनी में कहीं भी नैपियर घास उपलब्ध नहीं पायी गई। गोवंश-आश्रय-स्थल पर चारा काटने के लिए मशीन व ढुलाई के लिए ठेले की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है।
7. उपस्थिति पंजिका तथा कैश बुक पंजिका प्रस्तुत की गयी, जिसमें प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण है। प्रस्तुत कैश बुक पंजिका का रख-रखाव माह अप्रैल, 2023 से किया जा रहा है, जिसके अनुसार माह सितंबर, 2023 में दिनांक-01.09.2023 को रू0 19418/- तथा दिनांक-10.09.2023 को रू0 91800/- की धनराशि गोवंश समिति, जालौन से प्राप्त हुई है। सम्बन्धित अधिकारी द्वारा उपरोक्त पंजिकाओं में प्रविष्टियां व्यवस्थित ढंग से व नियमानुसार उचित प्रारूप में द्वारा किया जाना चाहिए।
8. ग्राम विकास अधिकारी द्वारा निरीक्षण पंजिका प्रस्तुत की गई, जिसके अनुसार इस वित्तीय वर्ष में कुल 06 निरीक्षण (दिनांक-15.04.2023, 02.05.2023, 12.07.2023, 24.08.2023, 04.09.2023 व 25.09.2023) संबंधित अधिकारियों द्वारा किए गए हैं, जिसमें उनके द्वारा सुझाव अंकित हैं। निरीक्षण पंजिका गोपालकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनके द्वारा जो सुझाव दिये गए हैं, उनका पालन हो रहा है कि नहीं। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित करना आवश्यक है, अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
9. निरीक्षण के समय मात्र 07 ट्री-गार्ड लगे हैं, परन्तु वह पौधेरहित हैं। इस गोवंश आश्रय स्थल के पास पर्याप्त खाली भूमि है, जिसकी खाली जमीन में उचित तरीके से वृक्षारोपण किया जा सकता है, जो पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से उपयोगी होगा। परिसर को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संबंधित अधिकारी द्वारा वृक्षारोपण के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है और ना ही गोवंशों गर्मी व धूप से बचाए जाने की कोई व्यवस्था की गई है। संबंधित अधिकारी द्वारा समय-समय पर जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए, जिससे गोवंश-आश्रय-स्थल का विकास हो सके। परिसर में रोशनी की व्यवस्था उपलब्ध है।
10. अन्ततः कमेटी के विचार में इस गोवंश-आश्रय-स्थल का रख-रखाव व प्रबन्धन ठीक है, जिसमें कुछ सुधार की आवश्यकता है।



(एस0वी0एस0 राठौर)
अध्यक्ष,ओवरसाइट कमेटी (एन0जी0टी0)
उत्तर प्रदेश

1391
ग्राम पंचायत-भुआ, विकासखण्ड-उकर, जनपद-जालौन स्थित अस्थायी
गोवंश-आश्रय-स्थल

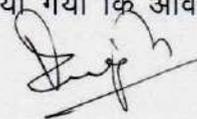


नगर पंचायत-एट, विकासखण्ड-डकोर, जनपद-जालौन स्थित कांजी हाउस की
निरीक्षण आख्या

दिनांक-26.09.2023 को ओवरसाइट कमेटी, एन0जी0टी0 द्वारा जनपद-जालौन, विकासखण्ड-डकोर के नगर पंचायत-एट में स्थित कांजी हाउस का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय निम्नलिखित अधिकारीगण/कर्मचारीगण उपस्थित हैं-

- 1- श्री बृज किशोर कुशवाहा, खण्ड विकास अधिकारी, डकोर
- 2- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी
- 3- श्री दिनेश कुमार यादव, उपायुक्त (एन0आर0एल0एम0)
- 4- श्री अरुण कुमार, ए0एस0ओ0, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- 5- डॉ0 देवेन्द्र कुशवाहा, पशु चिकित्सा अधिकारी, नगर पंचायत-एट
- 6- श्री विमल, गोपालक

1. यह कांजी हाउस वर्ष 2019 से संचालित होना सूचित किया गया है। इसे स्थापित करने के लिए भूमि नगर पंचायत से उपलब्ध कराई गयी है। यह परिसर चारों ओर से पक्की दीवार से घेरा गया है। तथा मुख्य द्वार पर गेट लगा हुआ है। पूरे परिसर में पक्की फर्श है। वर्तमान में इस कांजी हाउस में 01 गोपालक कार्यरत है, जिसका वेतन रूपया 8000/- प्रतिमाह है। यह कांजी हाउस आबादीयुक्त इलाके में स्थित है, परंतु आस-पास विद्यालय/अस्पताल/अन्य कोई गोवंश-आश्रय-स्थल नहीं है। इस कांजी हाउस में कुल 21 नर/मादा गोवंश व 02 बछड़े/बछिया, कुल 23 गोवंशों का संरक्षित होना बताया गया है। निरीक्षण के समय मात्र 20 गोवंश ही परिसर में पाये गये। अवगत कराया कि 03 गोवंशों को चराने हेतु भेजा गया है। गोपालक द्वारा बताया गया कि इस कांजी हाउस में 03 दुधारु गोवंश है तथा कोई भी गोवंश स्वयंसेवी गोपालकों को पशुपालन हेतु उपलब्ध नहीं कराया गया है। गोपालक द्वारा गोवंश पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, परन्तु मृत्यु पंजिका प्रस्तुत की गई, जिसके अनुसार पिछले दो वित्तीय वर्षों (2021-22 व 2022-23) में 19 गोवंशों की तथा इस वित्तीय वर्ष (2023-24) में 04 गोवंशों की मृत्यु (दिनांक-26.02.2023, 10.03.2023, 28.03.2023 व 16.04.2023) का होना मृत पंजिका में दर्ज है, किन्तु इस संदर्भ में कोई पंचनामा प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे गोवंशों की मृत्यु के कारण की जानकारी हो सके।
2. निरीक्षण के समय इस कांजी हाउस के संबंधित अधिकारी यहाँ उपस्थित नहीं हैं। उपस्थित गोपालक द्वारा प्रस्तुत टैगिंग पंजिका में 17 गोवंशों में टैगिंग पाई गयी, परन्तु 04 बछड़े/बछिया की टैगिंग व अन्य 02 गोवंश की टैगिंग के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया। टैगिंग पंजिका में दर्ज की गयी प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण पायी गयी, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह पंजिका तथ्यों को देखें बिना तथा निरीक्षण से तत्काल पूर्व तैयार की गयी है। उपस्थित गोपालक द्वारा बताया गया कि दिनांक 10.09.2023 को डी-वार्मिंग तथा दिनांक-14.09.2023 को एल0एस0डी0 टीकाकरण किया गया है, परंतु इस संदर्भ में कोई चिकित्सा पंजिका/टीकाकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गई, जिससे स्थिति की पुष्टि की जा सके। संबंधित पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा टैगिंग पंजिका व टीकाकरण पंजिका मानकों के अनुसार तैयार की जानी चाहिए, जिसमें गोवंशों का उपचार एवं टीकाकरण सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रविष्टियां नियमानुसार अंकित हो।
3. इस कांजी हाउस में 01 टिन-शेड (15.24 मी0 x 3.65 मी0) है, जिसमें टिन-शेड के नीचे दीवार से सटी हुई एक चरनी (12 मी0 x 1.5 मी0) निर्मित है। टिन-शेड के बगल में मूत्र व अपशिष्ट जल निकासी के लिए नाली व सोकपिट की व्यवस्था उपलब्ध है। बीमार, आशक्त एवं विकलांग गोवंशों के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था नहीं पाई गई। टिन-शेड तथा परिसर की साफ-सफाई ठीक है। यदि परिसर एवं टिन-शेड के किनारे गोबर, मूत्र एवं अपशिष्ट जल का व्यवस्थित ढंग से निस्तारण किया जाये, तो इसका प्रदूषणकारी प्रभाव कम किया जा सकता है।
4. गोवंशों के पेयजल आपूर्ति के लिये एक सबमर्सिबिल सहित हैन्डपम्प लगा हुआ है तथा एक पक्की हौज (1.52 मी0 x 1.21 मी0) बनी हुई है। जल के निस्तारण के लिये नाली बनी है, परंतु सोकपिट का निर्माण नहीं कराया गया है। परिसर में जलभराव की कोई समस्या नहीं पाई गई। गोपालक द्वारा बताया गया कि गोवंशों को उचित अंतराल पर नहलाया जाता है।
5. इस कांजी हाउस में कम्पोस्ट पिट की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई। परिसर के अंदर एक किनारे में गोबर खुले में पिछले कई दिनों से एकत्र किया जा रहा है। बताया गया कि आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध गोबर



ग्रामवासियों को दे दिया जाता है। परिसर में कम्पोस्टिंग, वर्मीकम्पोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र तथा गोबर एवं मूत्र के अन्य उपयोग की कोई व्यवस्था नहीं है, जैसा कि शासनादेश दिनांक- 02.01.2019 में निर्देशित किया गया है। इस कांजी हाउस की आय वृद्धि के लिए कम्पोस्टिंग के लिये गड्ढे बनाकर उसमें गोबर एवं मूत्र की नाली जोड़कर कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है, जिससे तैयार खाद की ग्राह्यता स्थानीय लोगों में अधिक होगी, किन्तु इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।

6. बताया गया कि इस कांजी हाउस में सभी संसाधनों का उपयोग करते हुए पशुओं का भरण-पोषण किया जाता है। निरीक्षण के समय सभी गोवंश स्वस्थ दिखे, उनका स्वास्थ्य भी ठीक लग रहा है तथा वे देखने में हष्ट-पुष्ट लग रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उन्हें समुचित आहार दिया जाता है। इस कांजी हाउस में एक भूसा भण्डारण कक्ष स्थित है, जिसमें भूसे की मात्रा काफी कम है। गोपालक द्वारा भूसा पंजिका प्रस्तुत की गई, जिसमें वित्तीय वर्ष व माहवार प्रविष्टियां दर्ज की गई है। इस पंजिका में अंतिम प्रविष्टि माह अगस्त, 2023 की है, जिसमें दिनांक 16.08.2023 को 50 कुंतल भूसे का क्रय किया गया है, परंतु उपयोग किए गए भूसे व बचे भूसे की कोई भी प्रविष्टि भूसा पंजिका में नहीं पायी गई, जिससे यह परिलक्षित होता है कि संबंधित अधिकारी द्वारा दर्ज की गई प्रविष्टियां अधूरी व त्रुटिपूर्ण है, जिसे निरीक्षण से तत्काल पूर्व बनाया गया है। नैपियर घास की बुआई के संबंध में कोई सूचना नहीं दी गई। कहीं भी नैपियर घास नहीं पायी गयी क्योंकि आस-पास आबादी क्षेत्र है। कांजी हाउस पर चारा काटने की मशीन व ढुलाई के लिए ठेले की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है।
7. लेखा पंजिका, निरीक्षण पंजिका, खाताबही पंजिका तथा सुपुर्दगीकरण पंजिका प्रस्तुत नहीं की गयी, जिससे प्रतीत होता है कि ये पंजिकाये न तो पूर्व में और न ही वर्तमान में बनाई गयी है। सम्बन्धित अधिकारी द्वारा उपरोक्त पंजिकाओं में प्रविष्टियां व्यवस्थित ढंग से व नियमानुसार उचित प्रारूप में द्वारा किया जाना चाहिए। निरीक्षण पंजिका गोपालकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान अपना मन्तव्य स्पष्ट एवं लिखित रूप से पंजिका में अंकित करना आवश्यक है तथा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनके द्वारा जो सुझाव दिये गए हैं, उनका पालन हो रहा है कि नहीं। अन्यथा निरीक्षण का आशय ही विफल हो जायेगा।
8. उक्त परिसर के अन्दर मात्र 02 वृक्ष लगे पाए गए, जिसमें से एक सूखा व एक हरा-भरा है। कोई भी ट्री-गार्ड परिसर में लगा नहीं पाया गया। चूंकि कांजी हाउस प्रांगण में पक्की फर्श बनी है, इसलिए परिसर के अंदर वृक्षारोपण किया जाना संभव नहीं है। परिसर में रोशनी की उचित व्यवस्था पाई गई।
9. अन्ततः कमेटी के विचार में इस कांजी हाउस का रखरखाव व प्रबन्धन अन्य गोवंश-आश्रय-स्थलों की अपेक्षा कुछ सीमा तक संतोषजनक है, जिसमें कुछ सुधार की आवश्यकता है।



(एस0वी0एस0 राठौर)
अध्यक्ष, ओवरसाइट कमेटी (एन0जी0टी0)
उत्तर प्रदेश

नगर पंचायत-एट, विकासखण्ड-उकर, जनपद-जालौन स्थित कांजी हाउस

1394



1395

प्रेषक,

डा० अनूप चन्द्र पाण्डेय,
मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

- 1- समस्त अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, उत्तर प्रदेश शासन।
- 2- समस्त मण्डलायुक्त, उ०प्र०।
- 3- समस्त जिलाधिकारी, उ०प्र०।
- 4- पुलिस महानिदेशक, उ०प्र०, लखनऊ।
- 5- समस्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक/पुलिस अधीक्षक, उ०प्र०।
- 6- समस्त नगर आयुक्त, उ०प्र०।
- 7- निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
- 8- निदेशक, रोग नियंत्रण एवं प्रक्षेत्र, पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
- 9- समस्त अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
- 10- समस्त जिला पंचायत राज अधिकारी, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
- 11- समस्त अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।

पशुधन अनुभाग-2

लखनऊ :: दिनांक 02 जनवरी, 2019

विषय:- उत्तर प्रदेश के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों (यथा-ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगमों) में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना व संचालन नीति का प्रख्यापन।

महोदय,

उत्तर प्रदेश पशुधन संख्या के दृष्टिकोण से देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। 19वीं पशुगणना 2012 के अनुसार कुल 501.82 लाख गोवंशीय+महिषवंशीय पशुओं में से 195.57 लाख गोवंशीय पशु हैं। कृषि कार्य में मशीनीकरण के कारण स्वदेशी/अवर्णित गोवंश के नर वत्स का उपयोग कृषि कार्य में किये जाने की परिपाटी प्रदेश से लगभग समाप्त हो गयी है। विदेशी नस्ल के नर वत्स का उपयोग उनमें डील (हम्प) नहीं होने के कारण कृषि कार्य में नहीं होता है इस कारण वर्तमान में गोवंशीय नर वत्स अनुपयोगी होते जा रहे हैं। इन नर गोवंश को पशु स्वामी बेसहारा छोड़ देते हैं। इसके अतिरिक्त ये निराश्रित गोवंश अनियंत्रित प्रजनन द्वारा अनुपयोगी/कम उत्पादकता के गोवंश की उत्पत्ति करते हैं जो निराश्रित पशुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करते हैं। प्रदेश में लगातार बढ़ रहे निराश्रित/बेसहारा गोवंश (नर+मादा) की संख्या में कमी किया जाना आवश्यक है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनायें चलाकर निराश्रित एवं बेसहारा पशुओं की समस्या के निदान एवं संख्या में कमी लाने का लगातार प्रयास कर रही है तथापि इस ज्वलन्त समस्या के निराकरण हेतु उत्तर प्रदेश के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों (यथा ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगमों) में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना व संचालन नीति प्रख्यापित की जा रही है।

2- नीति का उद्देश्य:-

1. निराश्रित/बेसहारा गोवंश को आश्रय उपलब्ध कराया जाना।
2. आश्रय स्थल पर रखे गये गोवंश हेतु भरण-पोषण की व्यवस्था।
3. संरक्षित गोवंश को विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण एवं समुचित चिकित्सा व्यवस्था तथा नर गोवंश का बंध्याकरण कराना।
4. संरक्षित मादा गोवंश को प्रजनन सुविधा उपलब्ध कराना।
5. गोवंश से उत्पादित दूध, गोबर, कम्पोस्ट आदि के विक्रय व्यवस्था से आश्रय स्थल को वित्तीय रूप से स्वावलम्बी (Self sustainable) बना कर जनमानस को निराश्रित/बेसहारा गोवंश की समस्या से छुटकारा दिलाना।

3- नीति को क्रियान्वित करने की कार्ययोजना:-

पशु अतिचार अधिनियम-1871 (संशोधित-21 अगस्त, 1996) में दिये गये प्राविधानों व पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण अधिनियम-1960 की धारा-4 के अधीन स्थापित भारतीय जीव जन्तु कल्याण

2
24


बोर्ड पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्गत दिशा-निर्देश पत्रांक-9-3/2018-19/पी0सी0ए0, दिनांक-12 जुलाई, 2018 के अनुसार निराश्रित पशुओं के संरक्षण एवं भरण-पोषण की जिम्मेदारी स्थानीय निकाय की है।

- 3.1 उक्त दिशा-निर्देशानुसार अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल (कभी भी संपूर्णतया हटाने योग्य) की स्थापना/व्यवस्था एवं प्रबन्धन/संचालन स्थानीय निकाय यथा ग्राम पंचायत/क्षेत्र पंचायत/जिला पंचायत/नगर पंचायत/नगर निगम (जहाँ जैसी स्थिति लागू हो) द्वारा की जायेगी।
- 3.2 ये स्थानीय संस्थाएँ अपने स्तर से स्वयं सेवी संस्थाओं अथवा सी0एस0आर0 में आने वाली कम्पनियों की सहायता इन अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों के प्रबन्धन/संचालन में ले सकते हैं।
- 3.3 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल (कभी भी संपूर्णतया हटाने योग्य) की स्थापना का कार्य संबन्धित सुसंगत स्थानीय निकायों द्वारा किया जायेगा।
- 3.4 अस्थायी आश्रय स्थलों के स्थापना हेतु वित्त पोषण की व्यवस्था मनरेगा, संबन्धित सुसंगत स्थानीय निकायों की संचित निधि (यथा-ग्राम पंचायत निधि/क्षेत्र पंचायत निधि/जिला पंचायत निधि, नगर निकायों की निधियाँ आदि), वित्त आयोग, खनिज विकास निधि, रायफल निधि, सांसद क्षेत्र विकास निधि, विधायक क्षेत्र विकास निधि आदि से करायी जा सकती है।
- 3.5 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों में संरक्षित गोवंश के संचालन, प्रबन्धन व भरण-पोषण की व्यवस्था स्थानीय निकायों द्वारा यथासंभव अपने स्वयं के संसाधनों से की जायेगी।
- 3.6 गोवंश के भरण-पोषण में निकायों में उपलब्ध संसाधनों में कमी के दृष्टिगत अतिरिक्त धन की आवश्यकता होने पर संबन्धित स्थानीय निकाय की माँग पर शासन द्वारा इस प्रयोजन हेतु उपलब्ध करायी गयी धनराशि से वित्त पोषण किया जायेगा।
- 3.7 शासन स्तर से अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों के प्रबन्धन/संचालन/भरण-पोषण विषयक वित्त पोषण प्राप्त करने हेतु जिलाधिकारी द्वारा गठित समिति के स्थलीय/भौतिक निरीक्षण के उपरान्त संरक्षित गोवंश की संख्या के 70 प्रतिशत की संख्या को आधार मानते हुए शासन द्वारा समय-समय पर निर्धारित धनराशि के आधार पर भरण-पोषण हेतु अनुदान देय होगा। यह व्यवस्था कृषि उत्पादन आयुक्त, उ0प्र0 शासन की अध्यक्षता में दिनांक-15.11.2017 को आयोजित बैठक में लिए गए निर्णय के क्रम में निर्गत पशुधन अनुभाग-2 के शासनादेश संख्या 2557/सैतीस-2-2017-5(16)/2017, दिनांक-15 दिसम्बर, 2017 के अनुसार की जायेगी।
- 3.8 प्रत्येक जनपद में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में न्यूनतम 1000 निराश्रित/बेसहारा गोवंश पशुओं के अस्थायी आश्रय निर्माण हेतु विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा किए जाने वाले कार्य एवं दायित्व (मुख्यालय व फील्ड सहित):-

3.8.1 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों हेतु भूमि चिन्हाँकन व भूमि उपलब्ध कराना:-

क्र0 स0	कार्य	विभाग	संबन्धित अधिकारी एवं कार्य
3.8.1	ग्राम पंचायत स्तर/नगर निकाय स्तर पर निराश्रित/बेसहारा गोवंश हेतु अस्थायी आश्रय स्थल बनाने योग्य निर्विवादित भूमि (जिसमें चारागाह/गोचर भूमि भी सम्मिलित है) उपलब्ध कराना। सिंचाई, मत्स्य, उद्यान, कृषि, गन्ना विकास आदि सहयोगी विभागों में भूमि यदि ग्राम स्तर पर उपलब्ध है तो उसे भी चिन्हाँकित करना।	राजस्व, नगर विकास (मुख्य नोडल विभाग प्रदेश मुख्यालय स्तर पर) एवं न्याय, कर निबन्धन विभाग तथा अन्य सहयोगी विभाग जैसे सिंचाई, मत्स्य, उद्यान, कृषि, गन्ना विकास विभाग आदि	प्रदेश मुख्यालय पर 1. मुख्य नोडल विभागों के प्रमुख सचिव/सचिव व विभागाध्यक्ष 2. लाइन विभागों के प्रमुख सचिव/सचिव व विभागाध्यक्ष 3. फील्ड स्तर पर (क) मण्डलायुक्त, (ख) जिलाधिकारी, (ग) उप-जिलाधिकारी (घ) लाइन विभागों के मण्डल एवं जनपद स्तरीय शीर्षस्थ अधिकारी 4. नगर निकायों के अधिशासी अधिकारी /नगर आयुक्त

24/11/18

3.8.2 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों में अवस्थापना सृजन (जो कभी भी संपूर्णतः हटाया जा सके):-

क्र० स०	कार्य	विभाग	संबन्धित अधिकारी एवं कार्य
3.8.2 (क)	अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की भूमि को उपयोग योग्य बनाना 1- ऊसर, बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाना 2-भूमि समतलीकरण करना 3-जल संरक्षण कार्य/ तालाब निर्माण 4-खाई निर्माण (प्राकृतिक बाड़)	कृषि विभाग नगर विकास विभाग ग्राम्य विकास विभाग पंचायती राज विभाग समाज कल्याण विभाग	मनरेगा योजना की मार्गनिर्देशिका के अनुबन्ध-36 के अनुसार मनरेगा एवं डेरी तथा पशुपालन विभाग के मध्य कन्वर्जेन्स के अंतर्गत चारागाह कार्य अनुमन्य कार्य श्रेणी में सम्मिलित है, जिसके अंतर्गत भूमि समतलीकरण, चारे हेतु घास का रोपण, पशुओं के प्रयोग हेतु तालाब की खुदाई, वृक्षारोपण का कार्य किया जा सकता है। प्रदेश मुख्यालय: संदर्भित विभागों के अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव /सचिव व विभागाध्यक्ष (राज्य स्तरीय अनुश्रवण समिति के निर्देशों के क्रम में) फील्ड स्तर पर संबन्धित विभागों के मण्डल/जनपद/तहसील/विकासखण्ड स्तरीय शीर्षस्थ अधिकारी तथा नगर निकायों के अधिशासी अधिकारी/नगर आयुक्त गण (जिला स्तरीय अनुश्रवण समिति के निर्देशों के क्रम में)
3.8.2 (ख)	अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर वृक्षारोपण	वन विभाग / पंचायती राज /ग्राम्य विकास/ नगर विकास विभाग	ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्गत मास्टर-सर्कुलर-2018-19 के पैरा-7.6.8 के अनुसार वृक्षा रोपण अनुमन्य कार्य श्रेणी सम्मिलित है। संभागीय वनाधिकारी, संबन्धित क्षेत्राधिकारी (वन), जिला पंचायत राज अधिकारी, नगर आयुक्त, संबन्धित अधिशासी अधिकारी, जिला विकास अधिकारी आदि द्वारा
3.8.2 (ग)	अस्थाई गोवंश आश्रय स्थलों पर जल की व्यवस्था कराना	सिंचाई विभाग / लघु सिंचाई विभाग / नेडा / नगर विकास	पशु आश्रय स्थल पर पानी की समुचित व्यवस्था करना, सोलर पंप आधारित नलकूप की व्यवस्था, पशुओं हेतु पीने के पानी की व्यवस्था। अधिशासी अभियन्ता (सिंचाई/ लघु सिंचाई विभाग), परियोजनाधिकारी-नेडा, नगर आयुक्त, संबन्धित अधिशासी अधिकारी
3.8.2 (घ)	अस्थाई गोवंश आश्रय स्थलों पर चारा उपलब्ध कराना	ग्राम्य विकास/पंचायती राज्य विभाग / नगर	गोवंश आश्रय स्थल पर पशुओं के चारे एवं भूसे की व्यवस्था करना,

Br
9/10/18

		विकास विभाग	भूसा रखने की व्यवस्था। यदि ग्राम पंचायतें इस कार्य को अपनी वार्षिक कार्य योजना (जी0पी0डी0पी0) में शामिल कर अनुमोदित करती हैं तो यह कार्य ग्राम पंचायत निधि के अंतर्गत संसाधनों के उपलब्धता के अनुसार कराया जा सकता है। नगर आयुक्त, संबन्धित अधिशासी अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी
3.8.2 (ड)	अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर सौर ऊर्जा/प्रकाश व्यवस्था	नेडा /नगर विकास विभाग / ग्राम्य विकास विभाग / पंचायती राज	गोवंश आश्रय स्थल क्षेत्र में समुचित प्रकाश व्यवस्था करना। अतिरिक्त शासकीय अनुदान प्राप्त होने पर यह कार्य ग्राम पंचायतों द्वारा कराया जा सकता है। परियोजनाधिकारी-नेडा, नगर आयुक्त, संबन्धित अधिशासी अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी

3.8.3 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर अन्य सेवाएँ:-

3.8.3 (क)	गोवंश आश्रय स्थल पर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्था	गृह विभाग/ग्राम्य विकास/पंचायती राज्य विभाग / राजस्व विभाग/ नगर विकास	गोवंश आश्रय स्थल पर पशुओं की देखरेख एवं सुरक्षा हेतु पशु रक्षक/श्रमिक की व्यवस्था करना। श्रमिक द्वारा गोवंश को खिलाने की व्यवस्था, गोबर एकत्र करना, पशुओं को पानी पिलाना, दूध निकालना, हरा चारा काटना तथा सफाई व्यवस्था करना। अतिरिक्त शासकीय अनुदान प्राप्त होने पर यह कार्य ग्राम पंचायतों द्वारा कराया जा सकता है। नगर आयुक्त, संबन्धित अधिशासी अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, संबन्धित उपजिलाधिकारी
3.8.3 (ख)	गोवंश आश्रय स्थल पर संरक्षित पशुओं की पशु चिकित्सा सेवाएँ	पशुपालन विभाग	संरक्षित गोवंश का स्वास्थ्य परीक्षण, चिकित्सा, कृमिनाशक दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ मृत पशुओं का शव परीक्षण इत्यादि का कार्य पूर्णतः निःशुल्क (लेवी से मुक्त) किया जायेगा। मुख्य पशुचिकित्साधिकारी पशुपालन विभाग के पर्यवेक्षण, नियंत्रण में

R
22/11/16
A
Anurag

- 3.9 प्रदेश के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नगर निकाय/स्थानीय निकाय क्षेत्रों में पिंजरापोल, कॉजी हाउस का पुनर्जीवीकरण कराया जाये। इनमें केयर टेकर/पर्यवेक्षण अधिकारी की अस्थायी/स्थायी व्यवस्था करते हुए इन्हें संचालित किया जायेगा। गायों का दूध निकाल कर उन्हें एवं उनके गोवत्स को छोड़ने वाले कृषकों/पशुपालकों का चिन्हांकन ग्राम स्तरीय विभागीय कार्मिक (यथा-राजस्व विभाग के लेखपाल, पुलिस विभाग के चौकीदार, ग्राम विकास के ग्राम विकास अधिकारी, पंचायती राज विभाग के पंचायतराज अधिकारी आदि) द्वारा किया जायेगा।
- 3.10 पशुपालको/कृषकों के अपने पालतू पशु सड़कों व सार्वजनिक स्थलों तथा अन्य व्यक्तियों की निजी भूमि पर संचरण हेतु यदि छोड़ा जाता है, तो इस दृष्टिकोण से स्थानीय पुलिस प्रशासन/जिला प्रशासन तथा नगर प्रशासन द्वारा उचित आर्थिक दण्डारोपण की कार्यवाही सुसंगत अधिनियमों के अंतर्गत की जायेगी।
- 3.11 ग्रामीण क्षेत्रों में जिलाधिकारियों और शहरी क्षेत्रों में नगर विकास विभाग के अधिकारियों द्वारा सक्रिय सहभागिता से जहाँ-जहाँ अप्रयुक्त खाली भूमि उपलब्ध है, उसे संबंधित विभाग के माध्यम से उस भूमि पर अस्थायी (किसी भी समय सम्पूर्णतया हटाया जा सकता है) गोवंश आश्रय स्थल निर्माण की कार्यवाही की जायेगी।

4- गोवंश आश्रय स्थलों के संचालन व प्रबन्धन को वित्तीय रूप से स्वावलम्बी (self sustainable) बनाने हेतु किये जाने वाले कार्य:-

- 4.1 गोवंश आश्रय स्थलों को स्वावलम्बी बनाने हेतु उ0प्र0 राज्य जैव ऊर्जा विकास बोर्ड-नियोजन विभाग, खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग, सूक्ष्म, लघु मध्यम उद्यम विभाग, स्किल डेवलपमेन्ट मिशन, ग्राम्य विकास विभाग, उद्यान विभाग के सहयोग से बायोगैस, कम्पोस्ट/बर्मी कम्पोस्ट, पंचगव्य आधारित औषधियों/उत्पादों यथा साबुन, अगरबत्ती, मच्छर भगाने की कायल, गोनाइल (गोमूत्र से बनी फिनायल) औषधियों आदि का उत्पादन एवं विक्रय करना।
- 4.2 गोबर एवं गोमूत्र आधारित जैविक कृषि एवं बागवानी द्वारा।
- 4.3 गोशाला के गोबर व गोमूत्र से बने खाद व कीटनाशक के विक्रय द्वारा।
- 4.4 गोबर से बने गमलों के विक्रय द्वारा।
- 4.5 गोबर से बने लट्टों का शमशान घाट में व सर्दियों में अलाव जलाने हेतु।
- 4.6 उद्यमियों को प्रेरित कर गोबर-गोमूत्र के सदुपयोग से बड़े बायोगैस/सी0एन0जी0 प्लाण्ट लगवाना।
- 4.7 शून्य बजट पर गो-आधारित प्राकृतिक कृषि पद्धति को अपनाकर गोबर एवं गोमूत्र से प्राकृतिक तरीके से जीवामृत, घन जीवामृत, बीजामृत तथा कीटनाशक का निर्माण करके उनका कृषि कार्यों में प्रयोग करने पर गोवंश आश्रय स्थलों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी तथा वे स्वावलम्बी हो सकेंगे।

5- अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, क्रियान्वयन, संचालन व प्रबन्धन के अनुश्रवण हेतु प्रशासकीय व्यवस्था:-

गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, क्रियान्वयन, संचालन व प्रबन्धन हेतु विकास खण्ड स्तरीय, तहसील स्तरीय, जनपद स्तरीय तथा मण्डल स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति का गठन एवं प्रदेश स्तर पर मुख्य सचिव, उ0प्र0 शासन की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय समन्वय समिति का गठन संलग्नक-1 के अनुरूप किया जाता है।

6- अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, संचालन व प्रबन्धन हेतु प्रस्तावित वित्त व्यवस्था/स्रोत। शासन द्वारा प्रस्तावित नीतियों को क्रियान्वित करने हेतु वित्त पोषण के संबंध में, सम्यक विचारोपरान्त, निम्न निर्णय लिये गये:-

- 6.1 मण्डी परिषद से मण्डी शुल्क/सेस से प्राप्त होने वाली 02 प्रतिशत की धनराशि प्रस्तावित कार्य पर व्यय किया जाये।
- 6.2 आबकारी विभाग द्वारा वार्षिक राजस्व के अतिरिक्त आय सेस लगाकर प्राप्त की जायेगी। इस सेस से प्राप्त धनराशि अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, व्यवस्था, संचालन व प्रबंधन हेतु चिन्हांकित मदों में व्यय की जायेगी।

2
22/1/19

- 6.3 प्रदेश में सार्वजनिक उद्यम विभाग के अंतर्गत लाभकारी निगमों व अन्य कार्यदायी संस्थाओं (यथा—उत्तर प्रदेश सेतु निगम, राजकीय निर्माण निगम, यूपीएसआईडीसी आदि) को होने वाले लाभ में 0.5 प्रतिशत के समतुल्य धनराशि सीएसआर के रूप में इस प्रयोजन हेतु व्यय की जाये।
- 6.4 राज्य सरकार के अधीन यूपीडा आदि संस्थाओं द्वारा अधिरोपित किये जा रहे टोल टैक्स में 0.5 प्रतिशत अतिरिक्त धनराशि "गौ कल्याण सेस" के रूप में अधिरोपित करते हुए इस प्रयोजन हेतु व्यय किया जाये।
- 6.5 आवश्यकतानुसार विभागीय योजनाओं में प्राप्त वित्त पोषण से डवटेलिंग करायी जायेगी।
- 7— शासन द्वारा सम्यक विचारोपरान्त, उपरोक्त प्रस्तर 3-5 में अंकित कार्ययोजना को क्रियान्वित करने हेतु निम्न निर्णय लिये गये हैं:—
- 7.1 प्रस्तर-3.1-3.6 के क्रियान्वयन व प्रस्तर-3.8.1 के अनुसार संबंधित विभागों द्वारा अस्थायी (किसी भी समय सम्पूर्णतया हटाने योग्य) गोवंश आश्रय स्थल के निर्माण हेतु भूमि उपलब्ध कराने विषयक सुसंगत विभागीय अधिनियमों, नियमावलियों, उपविधियों, शासनादेशों में सक्षम स्तर से अशोधन (Modification) व संशोधन (Amendment) की कार्यवाही की जायेगी।
- 7.2 प्रस्तर-3.8.2 के अनुसार अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों में अवस्थापना सृजन (जो कभी भी सम्पूर्णतः हटाया जा सके) हेतु प्रस्तावित कार्ययोजना पर सैद्धान्तिक अनुमोदन के साथ ही संबंधित विभागों को इस हेतु सक्षम स्तर से निर्णय कराने हेतु अधिकृत किया जाता है।
- 7.3 प्रस्तर-3.8.3 (क) के अनुसार अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर सुरक्षा एवं अन्य सेवायें उपलब्ध कराने हेतु चिन्हांकित विभाग पशु रक्षक/श्रमिक की व्यवस्था हेतु सक्षम स्तर से नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही हेतु सैद्धान्तिक अनुमोदन व साथ ही संबंधित विभागों को इस हेतु सक्षम स्तर से निर्णय हेतु अधिकृत किया जाता है।
- 7.4 प्रस्तर-3.8.3(ख) के अनुसार अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर संरक्षित पशुओं को पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी।
- 7.5 प्रस्तर-4 के अनुसार गोवंश आश्रय स्थलों को वित्तीय रूप से स्वावलम्बी बनाने के साथ ही संबंधित विभागों को इस हेतु सक्षम स्तर से निर्णय हेतु अधिकृत किया जाता है।
- 7.6 प्रस्तर-5 के अनुसार अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, क्रियान्वयन, संचालन, प्रबंधन के अनुश्रवण, मूल्यांकन हेतु संलग्नक-1 के अनुसार गठित प्रशासकीय व्यवस्था के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। विशेषतः मंडल स्तरीय समिति द्वारा सघन अनुश्रवण किया जाये व जनपद स्तरीय समिति में जनप्रतिनिधियों से आवश्यक सुझाव आदि भी लिये जायें।
- 7.7 प्रस्तर-3 के अधीन प्रस्तावित अस्थायी गो आश्रय स्थलों पर रखे जाने वाले पशुओं का चिन्हांकन व पंजीकरण की भी व्यवस्था की जाये व इसमें यथासंभव सूचना प्रौद्योगिकी का भी उपयोग किया जाये।
- 7.8 संलग्नक-1 में प्रस्तावित प्रदेश स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति द्वारा आवश्यकतानुसार निराश्रित गोवंश के भरण-पोषण हेतु अनुदान उपलब्ध कराये जाने विषयक मानक व प्रक्रिया भी निर्धारित किया जा सके।
- 8— उपरोक्त निर्णयों में कार्यहित में परिवर्तन हेतु मा0 मुख्यमंत्री जी अधिकृत होंगे।
- 9— प्रस्तावित नीति में प्राविधानित व्यवस्था तत्काल प्रभाव से लागू की जाय।
- 10— इस सम्बन्ध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि उत्तर प्रदेश के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों (यथा ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगमों) में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना व संचालन हेतु उपरोक्त नीति के अनुसार क्रियान्वयन करने हेतु अग्रेतर आवश्यक कार्यवाही शीर्षस्थ प्राथमिकता पर सुनिश्चित की जाये।
- संलग्नक — यथोपरि।

भवदीय,

A. Chandey

(डा0 अनूप चन्द्र पाण्डेय)

मुख्य सचिव।

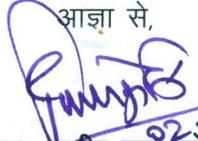
2
 21.11.21

1401

पू०सं०-4324(1)/सैंतीस-2-2018- तददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:

1. निजी सचिव, मा० पशुधन मंत्री जी, उत्तर प्रदेश शासन।
2. निजी सचिव, मा० पशुधन राज्यमंत्री जी, उत्तर प्रदेश शासन।
3. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, उ०प्र० पशुधन विकास परिषद, बादशाहबाग, लखनऊ।
4. वित्त नियंत्रक/संयुक्त निदेशक (नियोजन), पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
5. समस्त उप निदेशक/मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, पशुपालन विभाग, उ०प्र०।
6. गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(डा० मुधीर एम० बोबडे)
प्रमुख सचिव।
82.1.19
a

2
20.1.19

**अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की स्थापना, क्रियान्वयन, संचालन व प्रबन्धन
के अनुश्रवणार्थ प्रशासकीय व्यवस्था**

1. **विकास खण्ड स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति-प्रथम 03 माह में बैठक सप्ताह में**
न्यूनतम 01 बार तत्पश्चात् माह में 01 बार

1. खण्ड विकास अधिकारी	अध्यक्ष
2. संबन्धित पशुचिकित्साधिकारी	उपाध्यक्ष
3. संबन्धित ग्राम प्रधान	सदस्य
4. संबन्धित पशुधन प्रसार अधिकारी	सदस्य
5. वन विभाग के क्षेत्रीय अधिकारी	सदस्य
6. सहायक विकास अधिकारी (कृषि)	सदस्य
7. संबन्धित राजस्व निरीक्षक	सदस्य
8. ग्राम पंचायत अधिकारी	सदस्य सचिव

समिति के कर्तव्य एवं दायित्व

- विकास खण्ड के समस्त ग्राम सभाओं में जहाँ निराश्रित/बेसहारा गोवंश की समस्या है, में अस्थायी आश्रय स्थल हेतु उपलब्ध गोचर भूमि का प्रबन्धन।
- ग्रामवासियों के सहयोग से गोवंश को आश्रय में लाए जाने की व्यवस्था करना।
- संरक्षित गोवंश हेतु चारा-दाना, पीने के पानी की व्यवस्था करना।
- संरक्षित गोवंश की समुचित चिकित्सा व्यवस्था, अन्य पशुपालन संबन्धित कार्यों को पूर्णतः निःशुल्क (लेवी से मुक्त) कराया जाना।
- आश्रय स्थल पर हरे चारे की उपलब्धता हेतु खेत तैयार कराना, चारा बीज प्रबन्धन, सिंचाई व्यवस्था आदि कराना।
- आश्रय स्थल की सुरक्षा, लाइट की व्यवस्था करना।
- समस्त संरक्षित गोवंश का लेखा-जोखा रखना/टैग लगवाना।
- मृत पशुओं का निःशुल्क शव विच्छेदन कर निस्तारण की कार्यवाही नियमानुसार किया जाना।
- यदि किसी कृषक/पशुपालक द्वारा किसी गोवंश को क्रय किया जाता है तो समिति द्वारा निर्धारित कीमत पर बिक्री करना तथा यह सुनिश्चित करना कि पशु उक्त क्रेता के पास ही रहे तथा उसका उपयोग दुग्ध उत्पादन/कृषि कार्य के लिए ही किया जा रहा है। उक्त गोवंश के विक्रय से होने वाली आय ग्राम निधि की आय होगी जो पशुओं के भरण पोषण में ही प्रयोग की जा सकेगी।

2. **तहसील स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति -बैठक प्रथम 03 माह में सप्ताह में**
न्यूनतम 01 बार तत्पश्चात् माह में 01 बार

1. उपजिलाधिकारी	अध्यक्ष
2. पुलिस उपाधीक्षक	सदस्य
3. उप-मुख्य पशुचिकित्साधिकारी	सदस्य सचिव
4. समस्त खण्ड विकास अधिकारी	सदस्य
5. तहसीलदार	सदस्य
6. समस्त नायब तहसीलदार	सदस्य
7. अधिशासी अधिकारी नगर निकाय	सदस्य


2-1-15

8. वन विभाग के क्षेत्रीय अधिकारी सदस्य
9. उप संभागीय अधिकारी (कृषि प्रसार) सदस्य

समिति के कर्तव्य एवं दायित्व

- विकास खण्ड स्तरीय समिति द्वारा किए जा रहे उक्त वर्णित कार्यों की समीक्षा।
 - विकास खण्ड स्तरीय समिति को प्रबन्धन में आ रही कठिनाईयों का निराकरण करना।
 - उपरोक्त व्यवस्था उपरान्त भी गोवंश निराश्रित न हो इसे सुनिश्चित किया जाना।
 - यदि किसी कृषक/पशुपालक द्वारा पशुओं को छोड़ा जाता है तो इस संबन्ध में कार्यवाही किया जाना। कृषक/पशुपालक को प्रेरित किया जाना कि इस प्रकार का कार्य न करें जिससे समाज को कठिनाईयों का सामना करना पड़े।
3. **जनपद स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति:** प्रथमतः तीन माह तक बैठक माह में न्यूनतम दो बार उसके पश्चात् प्रत्येक तीन माह में एक बार बैठक प्रस्तावित है।

- | | |
|--|----------------------|
| 1. जिलाधिकारी | अध्यक्ष |
| 2. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक | सदस्य |
| 3. मुख्य विकास अधिकारी | सदस्य |
| 4. नगर आयुक्त नगर निगम | सदस्य |
| 5. मुख्य पशुचिकित्साधिकारी | सदस्य सचिव |
| 6. परियोजना निदेशक (डी.आर.डी.ए.) | सदस्य |
| 7. अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत | सदस्य |
| 8. समस्त उप-जिलाधिकारी | सदस्य |
| 9. अधिशासी अभियन्ता-सिचाई | सदस्य |
| 10. अधिशासी अभियन्ता-लघु सिचाई | सदस्य |
| 11. प्रभागीय वनाधिकारी(सामाजिक वानिकी) | सदस्य |
| 12. जिला पंचायतराज अधिकारी | सदस्य |
| 13. जिला ग्रामोद्योग अधिकारी | सदस्य |
| 14. जिला कृषि अधिकारी | सदस्य |
| 15. जिला उद्यान अधिकारी | सदस्य |
| 16. डी.डी.एम (NABARD) | सदस्य |
| 17. मा0 जनप्रतिनिधिगण सम्बन्धित जनपद | विशेष आमन्त्री सदस्य |

समिति के कर्तव्य एवं दायित्व

- विकास खण्ड/तहसील स्तरीय समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा।
 - तहसील स्तरीय समिति को प्रबन्धन में आ रही कठिनाईयों का निराकरण करना।
 - अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों हेतु वित्तीय प्रबन्धन
 - उपरोक्त व्यवस्था उपरान्त भी गोवंश निराश्रित न हो इसे सुनिश्चित किया जाना।
 - यदि किसी कृषक/पशुपालक द्वारा पशुओं को छोड़ा जाता है तो इस सम्बन्ध में कार्यवाही किया जाना। कृषक/पशुपालक को प्रेरित किया जाना कि इस प्रकार का कार्य न करें जिससे समाज को कठिनाईयों का सामना करना पड़े।
4. **मण्डल स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति:** प्रथम तीन माह में न्यूनतम दो बार तत्पश्चात् प्रत्येक माह में एक बार बैठक प्रस्तावित है।

- | | |
|--|---------|
| 1- मण्डलायुक्त | अध्यक्ष |
| 2- पुलिस महानिरीक्षक/पुलिस उप महानिरीक्षक | सदस्य |
| 3- स्थानीय निकाय, नगर विकास विभाग के मण्डल | |

2
20/11

स्तरीय शीर्षस्थ अधिकारी	सदस्य
4- अपर निदेशक, पशुपालन विभाग	सदस्य सचिव
5- उप निदेशक, पंचायती राज विभाग	सदस्य
6- मुख्य अभियन्ता, संबंधित मण्डल, सिंचाई विभाग	सदस्य
7- वन संरक्षक, वन विभाग	सदस्य
8- उप निदेशक, कृषि विभाग	सदस्य
9- अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों से संबंधित अन्य सुसंगत विभागों के मण्डल स्तरीय शीर्षस्थ अधिकारीगण	सदस्य

समिति के कर्तव्य एवं दायित्व:-

- जनपद स्तरीय समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा।
- जनपद स्तरीय समिति को प्रबन्धन में आ रही कठिनाईयों का निराकरण करना।
- अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों हेतु वित्तीय प्रबन्धन
- उपरोक्त व्यवस्था उपरान्त भी गोवंश निराश्रित न हो इसे सुनिश्चित किया जाना।
- यदि किसी कृषक/पशुपालक द्वारा पशुओं को छोड़ा जाता है तो इस सम्बन्ध में कार्यवाही किया जाना। कृषक/पशुपालक को प्रेरित किया जाना कि इस प्रकार का कार्य न करें जिससे समाज को कठिनाईयों का सामना करना पड़े।

5. प्रदेश स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति:

मुख्य सचिव महोदय, उ०प्र० शासन की अध्यक्षता में समस्त संबंधित विभागों के प्रमुख सचिव, सचिव एवं निदेशक के साथ- प्रथमतः तीन माह तक बैठक माह में न्यूनतम एक बार उसके पश्चात् प्रत्येक तीन माह में एक बार बैठक प्रस्तावित है। पशुधन विभाग, उ०प्र० शासन नोडल विभाग की भूमिका निभाएगा।

22

2019

21/19

उत्तर प्रदेश शासन
पशुधन अनुभाग-2
संख्या 261/सैंतीस-2-2019-5(53)/18
लखनऊ: दिनांक: 28 जनवरी, 2019

1. समस्त अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, उ०प्र० शासन।
2. समस्त मण्डलायुक्त, उ०प्र०।
3. समस्त जिलाधिकारी, उ०प्र०।
4. पुलिस महानिदेशक, उ०प्र०, लखनऊ।
5. समस्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक/पुलिस अधीक्षक, उ०प्र०।
6. समस्त नगर आयुक्त, उ०प्र०।
7. निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, उ०प्र० लखनऊ।
8. निदेशक, रोग नियंत्रण एवं प्रक्षेत्र, पशुपालन विभाग, उ०प्र० लखनऊ।
9. समस्त अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
10. समस्त जिला पंचायत राज अधिकारी, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
11. समस्त अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।

कृपया शासनादेश संख्या-4324/सैंतीस-2-2018-5(53)/2018, दिनांक 02 जनवरी, 2019 के द्वारा उत्तर प्रदेश के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों (यथा-ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगमों) में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना व संचालन की नीति का प्रख्यापन किया गया है। शासनादेश के प्रस्तर-7.8 (संलग्नक-1) के बिन्दु-5 के अनुसार प्रदेश स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति का गठन किया गया है तथा यह भी उल्लिखित है कि उक्त समिति द्वारा प्रथमतः तीन माह तक बैठक माह में न्यूनतम एक बार करेगी। तत्कम में प्रथम बैठक दिनांक 15.01.2019 को आयोजित की गयी।

2. उक्त बैठक में पशुपालन विभाग द्वारा निराश्रित/बेसहारा गोवंश हेतु अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल विषयक परामर्शी मार्गनिर्देशों का प्रस्तुतीकरण पशुपालन विभाग द्वारा किया गया, जिसके प्रत्येक प्रस्तर पर समिति द्वारा सामूहिक विमर्श करते हुए इस ज्वलंत समस्या के निदान हेतु विचार किया गया। मुख्य सचिव महोदय एवं समिति के अन्य सदस्यों द्वारा सम्यक विचारोपरान्त परामर्शी मार्गनिर्देशों पर प्रदेश स्तरीय समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया।

3. निराश्रित/बेसहारा गोवंश हेतु अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल विषयक परामर्शी मार्गनिर्देशों की प्रति संलग्न कर आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

संलग्नक:यथोक्त।

(डॉ० सुधीर एम० बोबडे)
प्रमुख सचिव।

संख्या (1)/सैंतीस-2-2019तददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. निजी सचिव, मा० पशुधन मंत्री जी, उ०प्र० शासन।
2. निजी सचिव, मा० पशुधन राज्यमंत्री जी, उ०प्र० शासन।
3. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, उ०प्र० पशुधन विकास परिषद, बादशाहबाग, लखनऊ।
4. वित्त नियंत्रक/संयुक्त निदेशक (नियोजन), पशुपालन विभाग, उ०प्र० लखनऊ।
5. समस्त उप निदेशक/मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, पशुपालन विभाग, उ०प्र०।
6. गार्ड फाइल।

आज्ञा से,

(अरविन्द कुमार सिंह)
विशेष सचिव।

28/1/19

निराश्रित/बेसहारा गोवंश हेतु अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल विषयक

परामर्शी मार्गनिर्देश

उद्देश्य

यह परामर्शी मार्गनिर्देश उदाहरण स्वरूप हैं। इन मार्गनिर्देशों में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर गठित समिति/टास्क फोर्स द्वारा निराश्रित/बेसहारा गोवंश की ज्वलंत समस्या के निदान हेतु यथावश्यकता अभिनवीकरण (Innovation) कार्यहित/जनहित में किया जा सकता है।

1. निराश्रित/बेसहारा गोवंश का तात्पर्य

निराश्रित/बेसहारा गोवंश का तात्पर्य ऐसे गोवंश से है जिसका कोई स्वामी/मालिक न हो एवं खेतों तथा सड़कों पर घूमते पाये जा रहे हों।

गोवंश की स्थिति जिसके कारण कृषक/पशुपालक उन्हें निराश्रित/बेसहारा छोड़ देते हैं:- (यह एक उदाहरणार्थ है न कि संपूर्ण)

(i) नर गोवंश जिनका उपयोग कृषक/पशुपालकों द्वारा नहीं किया जा रहा है। (यथा- सांड, बैल, बछड़ा आदि)

(ii) ऐसी मादा गोवंश जो-

1. गर्भ धारण न होने योग्य हो।
2. अशक्त हो।
3. दुर्घटनाग्रस्त हो।
4. बॉझपन से ग्रस्त हो।
5. स्थायी अनुवर्तता (Permanent Sterility) हो।
6. नगण्य दुग्ध उत्पादन क्षमता के कारण निराश्रित/बेसहारा हो।
7. शुष्क (dry) हो।

2. अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल स्थापना विषयक गतिविधियाँ

2.1 पशुओं का चिन्हांकन: निराश्रित/बेसहारा पशुओं के चिन्हांकन हेतु:-

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में फील्ड में निम्नतम स्तर (यथा-ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम/न्याय पंचायत स्तर व शहरी क्षेत्रों में नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम के स्तर पर उपलब्ध फील्ड स्तरीय) पर कार्यरत विभिन्न विभागों (यथा-राजस्व, पुलिस, सिंचाई, ग्राम्य विकास, पंचायतराज आदि) के कार्मिकों द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम/मजरावार, मोहल्ला/वार्डवार पशुओं का चिन्हीकरण किया जाये।

(2) पशुओं का चिन्हांकन करते समय आयु, ब्यात, लिंग आदि तथा यदि पशु स्वामी है तो, पशु स्वामी का नाम, पता व सम्पर्क हेतु दूरभाष क्रमांक आदि अंकित किया जाये।

(3) सभी निराश्रित/बेसहारा गोवंश का ग्राम स्तर पर चिन्हीकरण किया जाये। इसके लिए पशुपालन विभाग के पास उपलब्ध टैग से सभी गोवंश का टैगिंग कराया जाये। चूंकि वर्तमान में उपलब्ध टैग भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित योजना हेतु उपलब्ध है। अतः इसे रिप्लेस एवं भविष्य में

निराश्रित/बेसहारा पशुओं की संख्या को दृष्टिगत रखते हुए पशुपालन विभाग को, राज्य सरकार के बजट से टैग एवं उसको लगाने हेतु मानव संसाधन का वित्त पोषण भी किया जाये। इस हेतु पशुपालन विभाग योजना बनाते हुए राज्य बजट के माध्यम से धनराशि की माँग करेगा। यह भी निर्णीत हुआ कि टैगिंग कोड तथा पंजीकरण में यथासंभव जनपद/तहसील/विकास खण्ड/न्याय पंचायत/ग्राम पंचायत व पशु विवरण की व्यवस्था की जाये।

(4) यथा संभव चिन्हांकन में सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक (यथा-बारकोडिंग, RFID Tagging आदि) का प्रयोग किया जाये।

2.2 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल हेतु भूमि का चिन्हांकन व हस्तांतरण

(1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना हेतु विभिन्न शासकीय विभागों, सहकारी संस्थाओं व अन्य ऐसी संस्थाएं जिनका प्रशासकीय/वित्तीय नियंत्रण शासन में अंतर्निहित है, की अप्रयुक्त भूमि को नियमानुसार चिन्हांकित करना।

(2) निराश्रित/बेसहारा गोवंश आश्रय स्थल हेतु अन्य विभागों की भूमि का हस्तांतरण की प्रक्रिया जटिल व लम्बी हो सकती है, इसलिए भूमि का चिन्हांकन कर तत्काल इस भूमि का उपयोग अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों हेतु आरम्भ किया जाये।

(3) निराश्रित/बेसहारा गोवंश के अस्थायी आश्रय हेतु राजस्व विभाग की चारागाह की गोचर भूमि का उपयोग किया जा सकता है।

(4) यह भूमि राजस्व संहिता 2006 के प्राविधानों के दृष्टिगत चारागाह की भूमि धारा-77(1)क के अंतर्गत सार्वजनिक उपयोगिता की सुरक्षित श्रेणी में आती है, जिस पर न तो किसी को भूमिधारी अधिकार प्राप्त हो सकते हैं और न ही ऐसी भूमि को ग्राम सभा द्वारा एमओयू के आधार पर किसी अन्य गैर सरकारी संस्था (एनजीओ) आदि को प्रबंधन हेतु दिया जाना नियमानुकूल होगा।

(5) ऐसी भूमि पर ग्राम सभा द्वारा चारा प्रदान करने वाली वृक्ष प्रजातियों को रोपण किया जाता है अथवा पशुओं के पीने के लिए नलकूल व चरही आदि का निर्माण किया जा सकता है।

(6) किसी एनजीओ अथवा कारपोरेट घराने द्वारा सीएसआर के अंतर्गत ग्राम सभा को कोई सहयोग प्रदान किया जाता है अथवा ग्राम सभा के प्रस्ताव के बाद अपने व्यय पर नलकूप/चरही आदि की स्थापना की जा सकती है।

(7) इस भूमि के क्षेत्रफल के अधिकतम 10 प्रतिशत भाग पर ही अस्थायी अवस्थापना सृजन किया जा सकता है। शेष 90 प्रतिशत भाग खुला रहेगा जिसका उपयोग निराश्रित पशुओं के अतिरिक्त अन्य दुधारू पशुओं के विचरण हेतु पूर्व की भाँति यथावत किया जायेगा।

(8) अन्य विभागों की यदि भूमि उपलब्ध हो तो संबंधित जिलाधिकारी स्थानीय स्तर पर विभागीय अधिकारियों से अनापत्ति प्राप्त कर निराश्रित पशुओं के रखने हेतु उक्त भूमि का उपयोग प्रारम्भ कर सकते हैं।

(9) यदि कोई स्वयंसेवी संस्था पशु आश्रय स्थल स्थापित करने हेतु लीज पर भूमि की मांग करें तो सरकारी भूमि लीज पर नहीं दी जायेगी किन्तु संस्था द्वारा आश्रय स्थल के पशुओं की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दी जा सकती है।

(10) प्रत्येक जनपद में ग्रामीण/नगरीय क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश मण्डी परिषद, चीनी मिलों, शैक्षणिक संस्थाओं, पीसीएफ, पीसीडीएफ आदि सहकारी संस्थाएँ तथा केन्द्र सरकार के बन्द पड़े

2

2

2

प्रतिष्ठानों/अप्रयुक्त प्रतिष्ठानों में यथास्थिति अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल अथवा चारा/भूसा के रक्षण हेतु फॉडर बैंक (fodder Bank) हेतु इस भूमि/परिसर को उक्त विभाग/संस्था के जनपद स्तरीय अधिकारी से अनापत्ति प्राप्त कर उपयोग किया जाना। इस भूमि का सत्व (title) का परिवर्तन न हो, यह सुनिश्चित करने का दायित्व, जिला प्रशासन का होगा।

(11) पूर्व में स्थापित कामधेनु, मिनी कामधेनु एवं माइक्रो कामधेनु योजना के अधीन, निजी लाभार्थियों को, अवस्थापना हेतु शासन द्वारा अनुदानित व वित्तीय संस्थाओं द्वारा वित्त पोषित किया गया है। इन स्थानों को चिन्हांकन कर निजी लाभार्थियों के सहयोग से व भविष्य में वित्तीय संस्थाओं के साथ विधिक कठिनाई न हो, इसके दृष्टिगत इन स्थलों का उपयोग करना।

(12) पशुपालन, कृषि, उद्यान आदि विभागों के फील्ड स्तर पर उपलब्ध प्रक्षेत्र, गौशाला, गोसदन आदि की क्षमता में यथावश्यकता वृद्धि करते हुए अथवा इनकी पूर्ण/आंशिक भूमि को नियमानुसार व निहित प्रक्रियानुसार उपयोग करना।

(13) शासन द्वारा वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 में उपलब्ध कराये गये गोवंश आश्रय स्थलों के निर्माण हेतु उपलब्ध करायी गयी धनराशि का सदुपयोग करते हुए युद्धस्तर पर पक्के गोवंश आश्रय स्थल का निर्माण करना।

(14) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल के साथ नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्व से स्थापित व अक्रियाशील कॉजी हाउस, पिंजरापोल आदि की मरम्मत कराकर उन्हें क्रियाशील करना।

2.3 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल हेतु चिन्हांकित स्थानों को उपयोग योग्य बनाना

(1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल हेतु चिन्हांकित स्थलों को कृषि योग्य (विशेषतः चारा उगाने योग्य) बनाना। इस हेतु कृषि, ग्राम विकास, उद्यान विभाग आदि विभागों के माध्यम/सहयोग एवं यथा उपलब्धता वित्त पोषण से कार्य कराना।

(2) भूमि के समतलीकरण आदि के कार्य ग्राम्य विकास/पंचायतीराज एवं अन्य सुसंगत विभागों के माध्यम/सहयोग एवं यथा उपलब्धता वित्त पोषण से कराया जाना।

(3) जल संरक्षण व तालाब के निर्माण के कार्य ग्राम विकास/पंचायतीराज विभाग के माध्यम से कराना।

(4) वृक्षारोपण वन विभाग, ग्राम विकास, नगर विकास विभाग, ग्राम विकास एवं अन्य सुसंगत विभागों के माध्यम/सहयोग एवं यथाउपलब्धता वित्त पोषण से कराया जाना। इन वृक्षों के रख-रखाव हेतु वाचर (watcher) आदि कार्मिक की तैनाती यथा मानक करना।

2.4 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर पेयजल की व्यवस्था

उपयोग हेतु चिन्हांकित अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर पेयजल की समुचित व्यवस्था जिलाधिकारी के निर्देशन में ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत स्तर पर समिति द्वारा किया जायेगा। पेयजल हेतु हैण्डपम्प स्थापित कर एवं/अथवा, सौर ऊर्जा आधारित पेयजल अवस्थापना का सृजन किया जा सकता है।

2.5 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर प्रकाश की व्यवस्था

उपयोग हेतु चिन्हांकित अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर प्रकाश की समुचित व्यवस्था जिलाधिकारी के निर्देशन में ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत स्तर पर समिति द्वारा किया जायेगा। प्रकाश हेतु सौर

2

AC



3

ऊर्जा अथवा/एवं यथास्थिति नियमित विद्युत संयोजन के आधार पर रात्रि में प्रकाश की व्यवस्था की जा सकती है।

2.6 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर चारे की व्यवस्था (निम्नानुसार मार्गनिर्देश संलग्नक-1 पर व्यवस्थित है)

- (1) चारे की प्रजाति व उसके उत्पादन हेतु आवश्यक भूमि।
- (2) प्रति पशु चारे व भूसे की व्यवस्था विषयक आवश्यकता का मानकीकरण।
- (3) प्रस्तर-2.2 (8) के अनुसार फॉडर बैंक (fodder Bank) की स्थापना करना।
- (4) जनपद स्थित कृषि, पशुपालन, उद्यान एवं अन्य विभागों द्वारा उत्पादित भूसा/चारा या कृषकों की फसल अवशेष (crop residue) फॉडर बैंक (fodder Bank) में प्राप्त करने हेतु व्यवस्था करना।
- (5) भूसा एवं चारा की उपलब्धता करने हेतु तहसील स्तरीय राजस्व प्रशासन के माध्यम से एवं कृषि, पशुपालन, उद्यान एवं अन्य विभागों के सहयोग से भूसा एवं चारा उपलब्धता हेतु भूमि का चिन्हांकन करते हुए स्थानीय जलवायु, ऋतु के अनुसार दिये गये मार्ग निर्देशों के अनुरूप चारे की उपलब्धता।

2.7 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्था

- (1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर सुरक्षा हेतु स्थानीय पुलिस चौकी, पुलिस थाना को उत्तरदायी बनाया जाये। साथ ही ग्राम पंचायत स्तर पर उपलब्ध ग्राम स्तरीय स्थायी चौकीदार को अतिरिक्त धनराशि पर भी कार्य देने पर विचार जिला स्तर पर समिति द्वारा किया जा सकता है।
- (2) गोवंश को खिलाना, गोबर एकत्र करना, दूध निकालना, साफ सफाई व्यवस्था आदि कार्यों हेतु श्रमिकों की यथावश्यकता केवल संदर्भित ग्राम/निकाय के स्थानीय निवासी को अंशकालिक श्रमिक के रूप में तैनाती जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा किया जायेगा। इसमें ग्राम स्तर पर अन्य शासकीय योजनाओं के संचालन में सम्मिलित अंशकालिक रूप से कार्यरत कार्मिक (यथा-रसोइया आदि) का भी उपयोग किया जा सकता है। ऐसे अंशकालिक मानव संसाधन को प्रतिमाह न्यूनतम दो हजार रुपये पारिश्रमिक के आधार पर तैनात करने हेतु जिला स्तर पर समिति निर्णय कर सकती है।
- (3) श्रमिक की उपलब्धता स्थानीय स्तर पर गोवंश में रुचि रखने वाले स्वैच्छिक संस्थाएँ, अराजनैतिक संगठन/संस्थाएँ, धर्मार्थ कार्य में जुड़ी संस्थाओं के माध्यम से श्रमिक की तैनाती व वित्त पोषण कराना।

2.8 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर पशु चिकित्सा व्यवस्था

- (1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर संरक्षित पशुओं की चिकित्सा संबंधी सेवाएँ स्वास्थ्य परीक्षण, चिकित्सा, कृमिनाशक दवापान, बन्ध्याकरण, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान एवं मृत पशुओं का शव परीक्षण आदि कार्य पशुपालन विभाग के मुख्य पशु चिकित्साधिकारी के पर्यवेक्षण एवं अनुश्रवण में स्थानीय पशु चिकित्साधिकारी एवं सुसंगत विभागों के माध्यम से पूर्णतः निःशुल्क किया जाना।

२

५६

Ramesh

(2) गोवंश में रूचि रखने वाली स्वैच्छिक संस्थाएँ, अराजनैतिक संगठन/संस्थाएँ, धर्मार्थ कार्य में जुड़ी संस्थाओं आदि के माध्यम से भी पशु चिकित्साधिकारियों के संरक्षण में माइनर वेटनरी सर्विसेज (minor veterinary services) उपलब्ध कराना।

(3) बड़े नर गोवंश को बन्ध्याकरण करते समय मानव सुरक्षा के दृष्टिगत ट्रैन्क्विलाइजर गन (tranquilizer gun) की व्यवस्था पशुपालन विभाग द्वारा व्यवस्था की जाये। अंतरिम रूप से बड़े नर गोवंशों को नियंत्रित करते हेतु मण्डल/जिले स्तर पर वन विभाग के पास उपलब्ध संसाधन (ट्रैन्क्विलाइजर गन के प्रयोग हेतु) एवं स्थानीय निवासियों/ग्रामवासियों/सामाजिक संगठन आदि का सहयोग भी लिया जाये।

3. अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की संचालन व्यवस्था

3.1 पशुओं का विवरण

विवरण/सुझाव	गर्मी	सर्दी
पशुओं का आश्रय	पशुओं को रात में खुले में बाहर रहने दिया जाना चाहिए क्योंकि शोड बहुत गर्म होगा।	पशु रात के समय शोड के अंदर रखे जाना चाहिए।
चारा व्यवस्था (स्थानीय समय अनुसार)		
सुबह	सुबह 6 बजे शोड के अंदर	सुबह 7 बजे शोड के बाहर
शाम	शाम 4 बजे शोड के बाहर	शाम 5 बजे शोड के अंदर
गाय का गोबर हटाना	सुबह 8 से 10 बजे तक	सुबह 9 से 11 बजे तक
बाहरी क्षेत्र की छफाई	सुबह 8 से 10 बजे तक	शाम 5 से 7 बजे तक
शोड की सफाई	शाम 5 से 7 बजे तक	सुबह 9 से 11 बजे तक
ताजे पानी की उपलब्धता	शोड के अंदर और बाहर दोनों	शोड के अंदर और बाहर दोनों

3.2 चारा व पानी (संलग्नक-1)

(1) पशुओं के उन्नत स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त मात्रा में संतुलित आहार दिया जाना, जिसमें कम से कम 10% फाइबर युक्त भी सम्मिलित हो यथासंभव कृषि व अन्य अनुषांगिक विभागों के माध्यम से प्राप्त किया जाना। उक्त के अतिरिक्त यथा उपलब्धता साइलेज उपलब्धता के लिए भी कार्य किया जाना।

(2) पशुओं को 90% चारा जैसे घास, हरा चारा, सूखी घास व भूसा और 10% सब्जियों के अवशेष स्थानीय उपलब्धता व वित्त पोषण के आधार पर दिया जाना। गोवंश को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करने के लिए गुड़/राब (मोलेसेस) को आहार में यथावश्यकता व यथा उपलब्धता एवं वित्त पोषण के आधार पर आहार में जोड़ा जाना।

(3) सभी पशुओं के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध कराना, जिससे कि वे एक ही समय चारा खाने में आपसी प्रतिस्पर्धा/लड़ाई न हो सके।

12

AC

AC

3.3 आवास और पर्यावरण

- (1) पशुओं को यथासंभव एक स्वच्छ वातावरण में कम घनत्व पर छोटे-छोटे समानान्तर उम्र-समूहों (age-groups) में रखा जाना।
- (2) चलने में असमर्थ तथा अशक्त गोवंश हेतु पुआल का बिछाव, यथासंभव, प्रदान किया जाना।
- (3) गोवंश को रखने वाले स्थान पर पर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन की व्यवस्था होनी चाहिए। अत्यधिक तापमान और आर्द्रता को नियंत्रित किया जाना। अच्छी वायु गुणवत्ता सुनिश्चित किया जाना।
- (4) पशुओं के लिए यथा संभव न्यूनतम स्थान निम्न प्रकार होना चाहिए:-

पशु का प्रकार	प्रति पशु पलोर स्पेश वर्ग मी० में	
	कवर्ड स्पेश	ओपेन स्पेश
8 सप्ताह से कम उम्र के बछड़े	1.0	2.0
8 सप्ताह से अधिक उम्र के बछड़े	2.0	4.0
बछिया	2.0	4.0-5.0
वयस्क भैंसें	4.0	8.0
वयस्क गायें	3.5	7.0
ब्यांत के करीब पहुंची गायें	12.0	20-25
सांड	12.0	120.0
बैल	3.5	7.0

3.4 फर्श

यदि गो आश्रय स्थलों पर पक्की फर्श बनी है तो फर्श पूरी तरह से सपाट, फिसलनयुक्त, कठोर या बहुत खुरदरे न हो।

3.5 स्वास्थ्य परीक्षण व चिकित्सा

- (1) गोवंश प्रजाति की संकामक बीमारियों के सापेक्ष नियमित टीकाकरण कराना।
- (2) परजीवी नियंत्रण कार्यक्रम निरन्तर चलाना।
- (3) पशुओं को हर 06 महीने में खुरपका-मुँहपका रोग (एफएमडी) के खिलाफ टीका लगाना।
- (4) 90 दिनों की उम्र के प्रत्येक पशु बछड़े/बछिया को रेबीज का टीका लगाना।
- (5) बाह्य और आंतरिक परजीवियों को नियंत्रित करने के लिए एक वर्ष में कम से कम 03 बार कृमिनाशक दवापान कार्यक्रम चलाना।
- (6) यह सुनिश्चित करना कि अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर रखे हुए पशुओं के मध्य प्रजनन न हो।

3.6 बछड़े/बछिया

- (1) कम से कम 6 महीने की आयु तक गोवत्सों को माताओं से अलग नहीं करना।
- (2) गोवत्सों को कम से कम 6 महीने तक बिस्तर के साथ साफ, शुष्क परिस्थितियों में रखना। वीनिंग प्रक्रिया धीरे-धीरे कराना।
- (3) अनियंत्रित पशु प्रजनन रोकने हेतु नर बछड़ों का दर्द रहित तरीके से बन्ध्याकरण कराना।

Q

He

Ames

बि

3.7 पशु की मृत्यु

(1) गोवंश की मृत्यु की दशा में वर्तमान में विद्यमान उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम के अनुसार व्यवस्था नगरीय क्षेत्रों में की जाये व ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत अधिनियम के अनुसार व्यवस्था की जाये। नगरीय क्षेत्रों में/ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं के शव परिवहन व निस्तारण हेतु व्यवस्था करना, इन्सीनिरेटर आदि स्थापित करने विषयक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (solid waste management) म्यूनिसिपल सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट-2016 के अंतर्गत पंचायतीराज विभाग व नगर विकास विभाग योजना बनाते हुए सक्षम स्तर से अनुमोदन 02 सप्ताह में प्राप्त करेंगे।

(2) पशुओं के अंतिम संस्कार हेतु उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम की धारा-396 के अनुसार व्यवस्था नगरीय क्षेत्रों में करना।

(3) स्वभाविक/प्राकृतिक मृत्यु पर पंचनामा के आधार पर शव का निस्तारण किया जाना परन्तु किसी संदेह की आवस्था में शव बिच्छेदन (पोस्टमार्टम) अनिवार्य।

(4) अंतिम संस्कार हेतु प्रयुक्त होने वाली सामग्री का वित्त पोषण यथावश्यकता ग्राम्य विकास, पंचायतीराज विभागों आदि से कराना।

(6) सामग्री/वित्त पोषण अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं, धर्मार्थ कार्य में जुड़ी संस्थाओं के सहयोग से करना।

3.8 श्रमिकों की व्यवस्था

प्रस्तर 2.7 के अनुसार।

3.9 रिकार्ड कीपिंग/अभिलेखों का रखरखाव

(1) आश्रय स्थल पर रखे पशुओं/गोवंश के विवरण का एक रजिस्टर रखा जाना।

(2) उपचार किए गए समस्त गोवंश पशुओं का अभिलेखीकरण किया जाना। उक्त के साथ यथासंभव स्वस्थ पशुओं के नियमित जांच का भी अभिलेख रखना।

(3) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर मृत गोवंश तथा अन्य स्थानों/व्यक्तियों/संस्थाओं को हस्तांतरित पशुओं विषयक अभिलेख अनिवार्य रूप से रखना।

(4) गोसेवा आयोग के अधिनियम के अन्तर्गत हस्तांतरित गोवंश विषयक विशेष सजगता बरतना।

(5) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों में सूखे व हरे चारे का स्टॉक रजिस्टर रखना।

(6) गोवंश आश्रय स्थलों में प्राप्त होने वाली सीधी धनराशि विषयक/रसीद बुक/बैंक पासबुक आदि रखना।

(7) यदि अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर जनरेटर, एम्बुलेन्स वाहन आदि की व्यवस्था है तो उससे संबंधित लाग-बुक अंकित में विवरण अद्यतन रखना।

4. अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलो को आर्थिक/वित्तीय रूप से स्वावलम्बी (self-sustainable) बनाया जाना

(1) पंचगव्य आधारित औषधियों के प्रयोग हेतु जनमानस को प्रेरित किया जाना तथा कम खर्च में विभिन्न बीमारियों से छुटकारा दिलाना चाहिए। इसमें कार्यरत स्वैच्छिक संस्थाओं, धर्मार्थ कार्य से जुड़ी संस्थाओं, अराजनैतिक संस्थाओं आदि से सम्पर्क कर उनसे प्रौद्योगिकी प्राप्त करना।

संलग्नक-2

a

AL

Primer

(2) गोबर व गोमूत्र से जीवामृत का उत्पादन व विपणन कर उससे राजस्व प्राप्त करना।
संलग्नक-3

(3) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों तथा ग्राम पंचायत के अन्य पशु पालकों के माध्यम से सामूहिक गोबर गैस प्लांट स्थापित करना व उससे प्राप्त होने वाली कार्बनडाई आक्साइड, मीथेन एवं नाइट्रोजन गैस का अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ पृथक-पृथक कर विपणन योग्य उत्पादों का (यथा-सीएनजी, शुष्क बर्फ (ड्राई आइस) का उत्पादन कर राजस्व प्राप्त करना।

(4) जड़ी बूटियों एवं गोमूत्र से हर्बल कीटनाशक औषधियों का उत्पादन।

(5) गोबर लॉग का उत्पादन करना। ग्राम स्थित अंत्येष्टि स्थलों पर गोबर लॉग का प्रयोग अनिवार्य कर राजस्व प्राप्त करना।

(6) गोबर गमलों का उत्पादन करते हुए वन विभाग, उद्यान विभाग, कृषि विभाग एवं अन्य विभागों की नर्सरियों में प्लास्टिक के स्थान पर गोबर गमलों का प्रयोग कराते हुए राजस्व प्राप्त करना।

(7) गोबर कण्डों का उपयोग अनिवार्य रूप से ग्राम पंचायत में कार्यरत ईट भट्टों में कराते हुए राजस्व प्राप्त करना।

(8) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों पर संरक्षित गोवंश के गोबर, गोमूत्र से निर्मित उत्पादों एवं पंचगव्य उत्पादों हेतु ग्रामीण स्तर पर किसानों/पशुपालकों को प्रशिक्षण देकर बिना दूध के गोवंश (dry cow) को वित्तीय रूप से स्वावलम्बी बनाना।

(9) ग्रामीण स्तर पर किसानों/पशुपालकों को प्रशिक्षण देते हुए गोवंशों (अनुपयोगी सम्मिलित करने) के आधार पर जीरो बजट एवं जैविक खेती को बढ़ावा देना। इस हेतु स्थानीय स्तर पर गोवंश के गोबर एवं गोमूत्र के उत्पाद के प्रयोग को बढ़ावा देना। इस हेतु गो-विज्ञान केन्द्र, सेवाधाम, देवलापुर, नागपुर (महाराष्ट्र) का मॉडल अपनाने पर विचार।

(10) ग्राम स्तर पर छोटे-छोटे निराश्रित गोवंश की गोशाला/आश्रय स्थल बनाया जाना तथा उपयोगी बनाया जाना। नगर निगमों में आर्थिक रूप से संबल (economic viable) गोशालाओं की स्थापना की जानी तथा इस कार्य में विशेषज्ञता रखने वाली संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाय।

(11) जनपद स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति परामर्शी मार्गनिर्देश में दर्शाये गये बिन्दुओं का अध्ययन कर यथावश्यकता/उपयुक्तता के आधार पर कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी

5. गोवंश को किसानों/पशुपालकों को सुपुर्द किया जाना

(1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल से यदि गोवंश किसानों/पशुपालकों को दिये जाने की दशा में उनसे भू अभिलेख की खतौनी, पहचान पत्र, सरपंच/सभासद से प्रमाण पत्र प्राप्त किया जाना जिससे स्पष्ट हो कि इन्हें पशु की आवश्यकता है तथा वह इस पशु को निराश्रित/बेसहारा नहीं छोड़ेगा से संबंधित रू0 100 के स्टाम्प पेपर पर इस आशय का प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा।

(2) ग्राम स्तर पर निराश्रित/बेसहारा गोवंश को अपनाए जाने हेतु अभियान चलाकर जन-मानस को प्रेरित किया जाना तथा उनका ध्यान निराश्रित/बेसहारा गोवंश के कारण कृषि को होने वाली हानि तथा मार्ग दुर्घटनाओं की ओर आकृष्ट करते हुए जागरूक/प्रेरित किया जाय।

(2) पशु परिवहन नियम-1978 एवं अधिसूचना, 2001 में उपलब्ध प्राविधानों के अंतर्गत ही पशु का परिवहन सुनिश्चित किया जाये तथा जिस किसान/पशुपालक को गोवंश पालन-पोषण हेतु दिये जा रहा है, उसकी उस पशु की साथ फोटो भी लिया जाना तथा अभिलेखीकरण किया जाना।

12 KUL

(12)

Ramesh

(3) निराश्रित/बेसहारा गोवंश को बिना किसी कठिनाई/पीड़ा के पकड़े जाने हेतु कैटिल कैचर की व्यवस्था किया जाना।

6. अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर संरक्षित पशुओं के भरण-पोषण हेतु वित्त पोषण

(1) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों को प्रस्तर-4 अनुसार आर्थिक/वित्तीय रूप से स्वावलम्बी बनाये जाने का प्रयास किया जाये।

(2) पशुओं के भरण-पोषण हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत निधि/क्षेत्र पंचायत निधि/जिला पंचायत निधि में उपलब्ध धनराशि से भरण-पोषण अनुदान करने हेतु विषयक निर्णय यथावश्यक अधिनियम, नियम, उपविधि शासनादेश आदि में संशोधन पंचायतीराज विभाग द्वारा सक्षम स्तर से अनुमोदन प्राप्त करते हुए 02 सप्ताह में किया जायेगा। इसी प्रकार का संशोधन सक्षम स्तर से अनुमोदनोपरान्त नगर विकास विभाग द्वारा भी 02 सप्ताह में सुनिश्चित किया जायेगा।

(3) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थलों को संचालित किये जाने हेतु थर्ड पार्टी की सहायता प्राप्त करने की दशा में उन्हें भूमि का किसी भी प्रकार से हस्तांतरण नहीं किया जायेगा। मात्र usufruct rights के अंतर्गत संचालन में सहयोग लिया जायेगा। उदाहरण स्वरूप संलग्नक एम.ओ.यू. को आधार मानते हुए स्थानीय स्तर पर यथावश्यक संशोधन करते हुए जनपद स्तर पर गठित समिति द्वारा निर्णय लिया जायेगा। निर्णय लेते समय यह सुनिश्चित किया जायेगा कि किसी भी दशा में थर्ड पार्टी द्वारा न तो भूमि पर कब्जा किया जायेगा और न ही भूमि के सत्व (title) विषयक कोई लाभ प्राप्त किया जायेगा।

(3) निराश्रित/बेसहारा गोवंश जैसाकि प्रस्तर-1 में परिभाषित है, के भरण-पोषण जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित जनपद स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति के स्तर पर सुनिश्चित किया जाना।

(4) गोसेवा अधिनियम के अंतर्गत गोसेवा आयोग के साथ पंजीकृत गोशालाओं को मण्डी सेस के माध्यम से भरण-पोषण हेतु दिये जा रहे अनुदान प्रदान करने की प्रक्रिया शासनादेश संख्या-2557/सैंतीस-2-2017-5(16)/2017, दिनांक 15 दिसम्बर, 2017 के अनुसार यथावत रहेगी।

(5) जिलाधिकारी स्तर पर सरकारी कार्मिकों, आम नागरिकों एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों, स्वायत्तशासी संस्थाओं, सामाजिक कार्य/धर्मार्थ कार्य से जुड़ी संस्थाओं आदि द्वारा दिये जाने वाले दान हेतु कार्पस फण्ड (corpus fund) स्थापित किया जाय।

(7) शासन स्तर से प्राप्त होने वाली राजस्व अथवा पूँजीगत मद के अंतर्गत प्राप्त होने वाली धनराशि अथवा भरण-पोषण मद में प्राप्त होने वाली धनराशि का लेखा-जोखा पृथक-पृथक हो।

(8) कार्पस फण्ड का आडिट स्थानीय लेखा परीक्षा से कराकर रिपोर्ट नोडल विभाग को परीक्षण हेतु प्रेषित किया जाना।

7. कृषक/पशुपालक द्वारा स्वामित्व के पशुओं को निराश्रित/बेसहारा के रूप में छोड़ने पर रोक लगाने हेतु कार्यवाही

(1) उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम, 1916 की धारा-255 के अंतर्गत कार्यवाही किया जाना।

(2) उत्तर प्रदेश पंचायतराज मैनुअल के अध्याय-4 (ग्राम पंचायत के अधिकार, कर्तव्य, कृत्य तथा प्रशासन) के अंतर्गत धारा-15 (ग्राम पंचायत के कृत्य) की उपधारा (तेइस) "चिकित्सा और

or All

or

or

स्वच्छता"-(घ) "छुट्टा पशु और पशुधन के विरुद्ध निवारक कार्यवाही" के अंतर्गत उपयुक्त कार्यवाही करना।

(3) उत्तर प्रदेश पंचायतराज अधिनियम की धारा-37 की उपधारा (1) सपठित उत्तर प्रदेश पंचायतराज मैनुवल के नियम-220 एवं 224 के अंतर्गत यथावश्यक कार्यवाही करना।

(4) प्रचलित व्यवस्था के साथ पशु के पूर्व स्वामियों द्वारा पशुओं को निराश्रित/बेसहारा छोड़ने पर पुलिस एक्ट में जो प्राविधान हैं, उसके अनुसार कार्यवाही करने पर विचार किया जाये।

(5) पंचायतीराज विभाग द्वारा 02.08.2018 को निर्गत शासनादेश में छोड़े गये पशुओं के पूर्व स्वामियों पर जुर्माने/आर्थिक दण्ड की व्यवस्था है। नगर विकास विभाग भी इसी प्रकार अपने नियम, अधिनियम, का परीक्षण करते हुए आर्थिक दण्ड विषयक व्यवस्था की जायेगी साथ ही मॉडल बाइलॉज (आदर्श उपविधि) भी बनायी जायेगी, जिससे नगरीय क्षेत्रों में व्यावसायिक डेरी संचालन कार्यकर्ताओं को प्रभावी रूप से विनियमित किया जायेगा।

a

XSL

28-1-19

सिंचाई सुविधायुक्त क्षेत्रों के लिए बहुवर्षीय चारा फसल आधारित वर्ष पर्यन्त हरा चारा उत्पादन पद्धति
फसल चक्र: हाईब्रिड नैपियर+ (लोबिया-बरसीम+सरसों) फसल अवधि : 3-4 वर्ष

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	
हाईब्रिड नैपियर:- IGFRI-6, IGFRI-10, NB-21	15 फरवरी से जुलाई	20000 Rooted Slips को 100 X50 सेमी0 की दूरी पर रोपाई करें।	गर्मी में 8-9 सिंचाई करें	(1) बेसल ड्रेसिंग- 50+50+50 किग्रा0 NPK प्रति हे0 (2) टाप ड्रेसिंग- 50+50+50+50 किग्रा0 N प्रति हे0	प्रथम कटाई रोपाई के 75-80 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-40 दिन बाद करें।	
लोबिया:- ई0सी0-4216, कोहिनूर, बुन्देल लोबिया-1, बुन्देल लोबिया-1,	अप्रैल-मई (जब बरसीम फसल की कटाई समाप्त हो जायें)	20-25 किग्रा0 हाईब्रिड नैपियर की दो पंक्तियों की बीच लोबिया की दो पंक्ति लगायें	उपरोक्तानुसार	आवश्यकता नहीं पडती है	बुवाई के 60-65 दिन बाद कटाई करें	2000.00
बरसीम:- मेसकावी, बरदान, बुन्देल बरसीम-2, बुन्देल बरसीम-2 + सरसों:- चाईनीज कैबेज, जापानीज रेपसीड	अक्टूबर	25 किग्रा0 बरसीम + 1.5-2.0 किग्रा0 सरसों की बुवाई पलेवा किये गये खेत में छिटकवा विधि से करें	जार्ड में 8-10 दिन के अन्तराल पर तथा गर्मी में 12-15 दिन के अन्तराल पर कुल 12-15 सिंचाई करें।	बेसल ड्रेसिंग- 20+80 किग्रा0 NP प्रति हे0	प्रथम कटाई बुवाई के 50-55 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-35 दिन बाद करें।	

सिंचाई सुविधायुक्त क्षेत्रों के लिए एकवर्षीय चारा फसल आधारित वर्ष पर्यन्त हरा चारा उत्पादन पद्धति
फसल चक्र : ज्वार+लोबिया - बरसीम+सरसों - मक्का+लोबिया फसल अवधि : 01 वर्ष

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	7
ज्वार:- (1) एकल कटाई वाली ज्वार- पी0सी0-6, पी0सी0-9, एम0पी0चरी (1) बहु कटाई वाली ज्वार- एम0पी0चरीए SSG-59-3 +	जून से जुलाई	20-25 किग्रा0 ज्वार + 25-30 किग्रा0 लोबिया को 25 सेमी0 की पंक्ति दूरी पर 2:2 के अनुपात में बुवाई करें। (ज्वार की दो पंक्तियों के मध्य	आवश्यकतानुसार	बेसल ड्रेसिंग- 60+45 किग्रा0 NP प्रति हे0	प्रथम कटाई रोपाई के 55-60 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 35-40 दिन बाद करें।	1800- 1900

लोबिया:- ई0सी0-4216, कोहिनूर, बुन्देल लोबिया-1, बुन्देल लोबिया-1		लोबिया की दो पंक्ति)			
बरसीम:- मेसकावी, वरदान, बुन्देल बरसीम-2, बुन्देल बरसीम-2 + सरसों:- चाईनीज कैबेज, जापानीज रेपसीड	बुवाई अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से तृतीय सप्ताह तक करें।	25 किग्रा0 बरसीम + 1.5-2.0 किग्रा0 सरसों की बुवाई 20X20 सेमी0 की दूरी पर अथवा पलेवा किये गये खेत में छिटकवा विधि से करें	जाड़े में 8-10 दिन के अन्तराल पर तथा गर्मी में 12-15 दिन के अन्तराल पर कुल 12-15 सिंचाई करें।	बेसल ड्रेसिंग- 20+80 किग्रा0 NP प्रति हे0	प्रथम कटाई बुवाई के 50-55 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-35 दिन बाद करें।
मक्का:- अफ्रीकन टाल, गंगा सफेद-2, जे0-1006, जवाहर संकुल, विजय + लोबिया:- ई0सी0-4216, कोहिनूर, बुन्देल लोबिया-1, बुन्देल लोबिया-1	मार्च से अप्रैल एवं जून से जुलाई	25-30 किग्रा0 मक्का + 25-30 किग्रा0 लोबिया की 25 सेमी0 की पंक्ति दूरी पर 2:2 के अनुपात में (ज्वार की दो पंक्तियों के मध्य लोबिया की दो पंक्ति)	8-10 दिन के अन्तराल पर कुल 7-8 सिंचाई करें।	(1) बेसल ड्रेसिंग- 60+30 किग्रा0 NP प्रति हे0 (2) टाप ड्रेसिंग- 30 किग्रा0N प्रति हे0 बुवाई के 30 दिन बाद	कटाई बुवाई के 60-75 दिन बाद करें

वर्षा-आधारित क्षेत्रों के लिए वर्ष पर्यन्त हरा चारा उत्पादन पद्धति
फसल चक्र: पेनिसेटम ट्राई स्पेसिफिक हाईब्रिड (TSH)+बाजरा (दो-कटाई वाली फसल अवधि-3-4 वर्ष

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	7
पेनिसेटम ट्राई स्पेसिफिक हाईब्रिड (TSH)	जुलाई-अगस्त एवं मध्य फरवरी से मार्च	10000-12000 Rooted Slips को 75 सेमी की दूरी पर द्वि-पंक्ति विधि (Paired row) से 2.20 मी0 की दूरी पर	बरसात के अनुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 10 टन गोबर की सड़ी खाद एवं 40+50+30 किग्रा0 NPK प्रति हे0 की दर से (2) टाप ड्रेसिंग- 30 किग्रा0 N प्रति हे0 बुवाई के 30 दिन बाद	प्रथम कटाई रोपाई के 75-80 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-40 दिन बाद करें।	800- 900
बाजरा (दो कटाई वाली):- राज, बाजरा चरी-2,	जून से जुलाई	पंक्ति से पंक्ति की दूरी 2.2 मी0 एवं पौध से पौध की दूरी 30 सेमी0 पर	बरसात के अनुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 30+30 किग्रा0 NP प्रति हे0	बुवाई के 40-50 दिन बाद प्रथम कटाई करें तथा दूसरी कटाई	

AVKB-19		बुवाई करें।		(2) टाप ड्रेसिंग- 30 किग्रा0 N प्रति हे0 बुवाई के 30-35 दिन बाद एवं 30 किग्रा0 प्रथम कटाई के बाद प्रयोग करें।	40-45 दिन के बाद पुनः करें।
---------	--	-------------	--	--	--------------------------------

उद्यान-चरागाह पद्धति द्वारा हरा चारा उत्पादन
फसल चक्र : आंवला/अमरुद/बेर/आम/इमली+(गिनी घास/नैपियर हाईब्रिड (3)दशरथ घास(1)),
फसल अवधि : 4-5 वर्ष

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	7
गिनी घास + दशरथ घास गिनी घास:- बुन्देल गिनी-1, 2 एवं 3, हैमिल, रिवसडेल, गल्टन + दशरथ घास	मध्य फरवरी से जुलाई तक	गिनी घास के Rooted Slips के साथ 5 किग्रा0/हे0 दशरथ घास के बीज को 3:1 अनुपात में मुख्य औद्यानिक फसल के दो पंक्तियों के मध्य बुवाई/रोपाई करें।	औद्यानिक फसलों की आवश्यकतानुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 50+50+25 किग्रा0 NPK प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें। (2) टाप ड्रेसिंग- 50 किग्रा0 N प्रति हे0 प्रत्येक कटाई के बाद प्रयोग करें।	प्रथम कटाई रोपाई के 70-75 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-40 दिन बाद करें।	1200-1500
नैपियर हाईब्रिड दशरथ घास नैपियर हाईब्रिड:- IGFRI-6, IGFRI-10, NB-21 + दशरथ घास	मध्य फरवरी से जुलाई तक	नैपियर हाईब्रिड के Rooted Slips के साथ 5 किग्रा0/हे0 दशरथ घास के बीज को 3:1 अनुपात में मुख्य औद्यानिक फसल के दो पंक्तियों के मध्य बुवाई/रोपाई करें।	औद्यानिक फसलों की आवश्यकतानुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 50+50+50 किग्रा0 NPK प्रति हे0 (2) टाप ड्रेसिंग- 50+50+50+50 किग्रा0 N प्रति हे0 प्रत्येक कटाई के बाद प्रयोग करें।	प्रथम कटाई रोपाई के 75-80 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-40 दिन बाद करें।	

R

AK

S. S. S.

वन-चरागाह पद्धति द्वारा हरा चारा उत्पादन
फसल चक्र : सुबबूल+TSH+(ज्वारलोबिया) फसल अवधि-3-4 वर्ष

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	7
सुबबूल +TSH (ज्वार +लोबिया) TSH + सुबबूल-के0-8	जुलाई-अगस्त एवं मध्य फरवरी से मार्च	द्वि-पंक्ति विधि (Paired row) में 75 सेमी0 की दूरी पर TSH की रोपाई करें। TSH की पंक्ति से 50 सेमी0 की दूरी पर सुबबूल की तथा पुनः सुबबूल की पंक्ति से 50 सेमी की दूरी पर TSH की दूसरी द्वि-पंक्ति लगाये। इसके बाद 3.0 मी0 की दूरी छोड़कर पुनः दूसरा सेट लगाये। इस पद्धति में TSH की 12000-15000 Root Slips/हे0 एवं 1.5-2.0 किग्रा0/ हे0 सुबबूल के बीज की आवश्यकता पडती है।	आवश्यक तानुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 200 कु0 गोबर की खाद एवं 20+30+30 किग्रा0 NPK प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें। (2) टाप ड्रेसिंग- 20 किग्रा0 N प्रति हे0 प्रत्येक कटाई के बाद प्रयोग करें।	प्रथम कटाई रोपाई के 75-80 दिन बाद करें तथा अगली कटाई पूर्व कटाई से 30-40 दिन बाद करें।	500-600
ज्वार चारा:- एम0पी0चरी, पी0सी0-6 लोबिया:- ई0सी0-4216, कोहिनूर, बुन्देल लोबिया-1, बुन्देल लोबिया-1	जून-जुलाई	12-15 किग्रा0 ज्वार चारा बीज + 20-25 किग्रा0 लोबिया को 25 सेमी0 की पंक्ति दूरी पर दो सेट के मध्य बुवाई करें।	आवश्यक तानुसार	(1) बेसल ड्रेसिंग- 30+30 किग्रा0 NP प्रति हे0	कटाई बुवाई के 60-75 दिन बाद करें	

R

AE

Ramesh

दो फसलीय मौसम के मध्य रिक्त समय (Lean Period) में हरा चारा उत्पादन
उपलब्ध रिक्त समय (Lean Period)

1. रबी फसल कटाई के बाद मई-जून (दो माह)
2. खरीफ फसल कटाई के बाद अक्टूबर-नवम्बर (दो माह)

फसलों का चयन-कम अवधि वाली चारा फसलों का चयन करें।

- 1-मई से जून (दो माह) हेतु फसल चक्र- मक्का+लोबिया अथवा बाजरा/ज्वार+लोबिया
- 2-अक्टूबर-नवम्बर (दो माह) हेतु फसल चक्र- सरसों अथवा शलजम / चुकन्दर

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	हरा चारा कटाई का समय	हरा चारा उत्पादन (कु0/हे0/वर्ष)
1	2	3	4	5	6	7
मक्का:- अफ्रीकन टाल, गंगा सफेद-2, जे0-1006, जवाहर संकुल, विजय ज्वार चरी:- एम0पी0चरी, SSG- 59-3, PC-6 बाजरा चरी :- राज, बाजरा चरी-2, AVKB-19 लोबिया:- ई0सी0-4216, कोहिनूर, बुन्देल लोबिया-1, बुन्देल लोबिया-1	अप्रैल-मई	25-30 किग्रा0 मक्का अथवा 5 किग्रा0 बाजरा अथवा 25-30 किग्रा0 ज्वार + 20-25 किग्रा0 लोबिया को प्रति हे0 की दर से 25-30 सेमी0 की पंक्ति दूरी पर 2:2 के अनुपात में बुवाई करें।	8-10 दिन के अन्तराल पर कुल 7-8 सिंचाई करें।	(1) बेसल ड्रेसिंग- 60+30 किग्रा0 NP प्रति हे0 (2) टाप ड्रेसिंग- 30 किग्रा0 N प्रति हे0 बुवाई के 30 दिन बाद	कटाई बुवाई के 60-75 दिन बाद करें	300-350
सरसों:- वरदान, रोहिनी, पूसा बहार	सितम्बर- अक्टूबर	5-6 किग्रा0 बीज को 20-25 सेमी की पंक्ति दूरी पर बुवाई करें।	2-3 सिंचाई	बेसल ड्रेसिंग- 60+30+20 किग्रा0 NPK प्रति हे0	कटाई 50 प्रतिशत फूल आने पर करें।	
शलजम:- स्नोवाल, पूसा चन्द्रिमा, पर्पिल टाप	सितम्बर- अक्टूबर	5-6 किग्रा0 बीज प्रति हे0 की दर से 30X10 सेमी की दूरी पर मेडों पर बुवाई करें।	बुवाई के तुरन्त बाद एक हल्की सिंचाई एवं अन्य 15 दिन के अन्तराल पर	(1) बेसल ड्रेसिंग- 10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 60+30+30किग्रा0 NPK प्रति हे0 की दर से	कटाई 65-70 दिन बाद करें	
चुकन्दर:- भुआ, कावेरी, IISR Comp-1	अक्टूबर	3-4 किग्रा प्रति हे0 मेडों पर 50 सेमी की दूरी पर	8-10 सिंचाई	बेसल ड्रेसिंग- 120+60+60 किग्रा0 NPK प्रति हे0	जड़ों के पूर्ण विकसित हो जाने पर (बुवाई से 120 दिन बाद)	

शर्करायुक्त फसलों से हरा चारा एक विकल्प के रूप में

चारा फसल का नाम एवं प्रजाति	बुवाई/रोपाई का समय	बीज दर एवं बुवाई/रोपाई हेतु दूरी	सिंचाई की संख्या	पोषक तत्व प्रबन्धन	कटाई का समय	उत्पादन (कु0/हे0)
1	2	3	4	5	6	7
गन्ना (अगोले के रूप में):- (1) अगोली प्रजातियाँ-को. जे.-64, कोशा, -8436, को. शा.-88230, को.लख.-94184 आदि (2) देर से पकने वाली प्रजातियाँ- को.शा.-96275, को.शा.-97261, यू.पी.-0097 (हृदय), यू.पी.-39 आदि	फरवरी-मार्च एवं अक्टूबर में	तीन आंख वाले 40000 टुकड़े 90 सेमी की दूरी पर पंक्तियों में समतल खेत/मेडों पर बुवाई करें	5-6 सिंचाई	10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 300+100+200 किग्रा0 NPK प्रति हे0 प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस एवं पोटैश की कुल मात्रा बुवाई के समय कूड़ों में तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा बुवाई के 80-90 दिन बाद टाप ड्रेसिंग करें।	अक्टूबर माह से	700-800 कु0/हे0 (33 प्रतिशत अगोले के रूप में हरा चारा)
शलजम:- रनोवाल, पूसा चन्द्रिमा, पर्पिल टाप	सितम्बर-अक्टूबर	5-6 किग्रा0 बीज प्रति हे0 की दर से 30X10 सेमी की दूरी पर मेडों पर बुवाई करें।	बुवाई के तुरन्त बाद एक हल्की सिंचाई एवं अन्य 15 दिन के अन्तराल पर	(1) बेसल ड्रेसिंग- 10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 60+30+30किग्रा0 NPK प्रति हे0 की दर से	कटाई 65-70 दिन बाद करें	250-300 कु0/हे0
चुकन्दर:- शुभ्रा, कावेरी, IISR Comp-1	अक्टूबर का प्रथम सप्ताह	3-4 किग्रा प्रति हे0 मेडों पर 50 सेमी की दूरी पर	8-10	बेसल ड्रेसिंग- 10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 120+60+60 किग्रा0 NPK प्रति हे0	जड़ों के पूर्ण विकसित हो जाने पर (बुवाई से 120 दिन बाद)	250-300 कु0/हे0
गाजर:- पूसा केसर, पूसा मेघाली, पूसा यमदग्नि, नेन्टस, चेन्टने, सेले0-233 पायनियर हाइब्रिड	सितम्बर-नवम्बर	6.0-10.0 किग्रा0/हे0 समतल खेत/मेडों पर 20 X 10 सेमी0 की दूरी पर	बुवाई के तुरन्त बाद एक सिंचाई एवं अंकुरण के बाद प्रत्येक सप्ताह	बेसल ड्रेसिंग- 10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 40+20+20 किग्रा0 NPK प्रति हे0	जड़ों के ऊपरी सिरा का व्यास 2.5 से 3.5 सेमी0 विकसित हो जाने पर	250-300 कु0/हे0
शकरकन्द:- (1) सफेद प्रजातियाँ-V-2, V-8, V-12, पूसा सफेद (2) लाल प्रजातियाँ- पूसा सुनहरी, पूसा लाल, V-6	मार्च या जून-जुलाई	4.0-5.0 कु0/हे0 कन्द (Root) या 40000-50000 लतायें/हे0 मेडों पर 60 X 30 सेमी0 की दूरी पर	आवश्यक अनुसार	बेसल ड्रेसिंग-10-12 टन/हे0 गोबर की खाद एवं 35+20+110 किग्रा0 NPK प्रतिहे0 टाप ड्रेसिंग-बुवाई के 60-75 दिन बाद 35 किग्रा0 N/हे0 मेडों पर मिट्टी चढ़ाते समय	कटाई 105-110 दिन बाद करें	250-300 कु0/हे0

a

Ar

Amm

पंचगव्य

गाय से उत्पन्न प्रत्येक गौजन्य पदार्थ एक औषधि है। गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर से पंचगव्य बनाया जाता है। गाय का दूध स्वादिष्ट ठण्डा, कोमल, घी वाला, गाढ़ा, चिकना लिपटने वाला, भारी ढीला और स्वच्छ होता है। गाय का दूध अच्छा मीठा, वातपित्तनाशक व तत्काल वीर्य उत्पन्न करने वाला होता है। इस प्रकार गाय का दूध जीवन शक्ति को बढ़ाने वाला सर्वश्रेष्ठ रसायन है। गाय के दूध से बना दही शरीर को पुष्ट करने वाला होता है। गाय का घी बुद्धि, कान्ति, स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाला, बल देने वाला, शुद्धि करने वाला, गैस मिटाने वाला, थकावट मिटाने वाला। गाय का घी अमृत के समान है जो जहर का नाश करने वाला व नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाला होता है।

गोमूत्र का महत्व चरक संहिता आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों में गोमूत्र की बड़ी महिमा बताई है। गोमूत्र तीता, तीखा, गरम, खारा, कड़वा, और कफ मिटाने वाला है। हल्का अग्नि बढ़ाने वाला, बुद्धि और स्मरण शक्ति बढ़ाने वाला, पित्त, कफ और वायु को दूर करने वाला होता है। त्वचा रोग, वायु रोग, मुख रोग, अमावत पेट के दर्द और कुष्ठ का नाशक है। खांसी, दमा, पीलिया, रक्त की कमी को गोमूत्र देर करता है। मात्र गोमूत्र पीने से खुजली, गुदा का दर्द, पेट के कीड़े, पीलिया आदि रोगों का शमन होता है। गोबर का महत्व गोबर का सबसे बड़ा गुण कीटाणु नाशक है। इसमें हर प्रकार के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। इसलिए गावों में आज भी शुभ कार्य करने से पूर्व गोबर से लेपा जाता है। इससे पवित्रता व स्वच्छता दोनों बनी रहती है। गोबर हैजे, प्लेग, कुष्ठ व अतिसार रोगों में लाभप्रद है।

पंचगव्य एक औषधि है। गाय के गोबर का रस, दही का खट्टा पानी, दूध, घी और गोमूत्र इन सभी चीजों को बराबर मात्रा में लेकर बनाई गई औषधि प्रयोग करने से विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती है ऐसा पाया गया है।

Q

AK



जीवामृत

किसान भाईयो जीवामृत एक अत्यधिक प्रभावशाली जैविक खाद है। जिसे गोबर के साथ पानी में कई और पदार्थ मिलाकर तैयार किया जाता है। जो पौधों की वृद्धि और विकास में सहायक है। यह पौधों की विभिन्न रोगाणुओं से सुरक्षा करता है तथा पौधों की प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है जिससे पौधे स्वस्थ बने रहते हैं तथा फसल से बहुत ही अच्छी पैदावार मिलती है। जीवामृत को किसान भाई दो रूपों में बना सकते हैं।

1 तरल जीवामृत

तरल जीवामृत बनाने की विधि

किसान भाईयो तरल जीवामृत बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

- 1- देशी गाय का 10 किलो गोबर (देशी बैल या गाय का)
- 2- 10 लीटर गौमूत्र (देशी बैल या गाय का)
- 3- पुराना सड़ा हुआ गुड़ 1 किलो (नया गुड़ भी ले सकते हैं) अगर गुड़ न मिले तो 4 लीटर गन्ने का रस भी प्रयोग कर सकते हैं।
- 4- किसी भी प्रकार की दाल का 1 किलो आटा (मूंग, उर्द, अरहर, चना आदि का आटा)
- 5- बरगद या पीपल के पेड़ के नीचे की मिट्टी 1 किलो इसे सजीव मिट्टी भी कहते हैं। अगर पीपल या बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी न मिले तो ऐसे खेत की मिट्टी प्रयोग की जा सकती है जिसमें कीटनाशक न डाले गए हों।
- 6- 200 लीटर पानी
- 7- एक बड़ा पात्र (ड्रम आदि)

ये सब सामग्री इकट्ठा करके सबसे पहले 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर, 10 लीटर देशी गौमूत्र, 1 किलोग्राम पुराना सड़ा हुआ गुड़ या 4 लीटर गन्ने का रस, 1 किलोग्राम किसी भी दाल का आटा, 1 किलोग्राम सजीव मिट्टी एवं 200 लीटर पानी को एक मिट्टी के मटके या प्लास्टिक के ड्रम में डालकर किसी डंडे की सहायता से इस मिश्रण को अच्छी तरह हिलाये जिससे ये पूरी तरह से मिक्स हो जाये। अब इस मटके या ड्रम को ढक कर छांव में रखदे। इस मिश्रण पर सीधी धूप नहीं पड़नी चाहिए।

अगले दिन इस मिश्रण को फिर से किसी लकड़ी की सहायता से हिलाए, 6 से 7 दिनों तक इसी कार्य को करते रहे। लगभग 7 दिन के बाद जीवामृत उपयोग के लिए बनकर तैयार हो जायेगा। यह 200 लीटर जीवामृत एक एकड़ भूमि के लिये पर्याप्त है।

देशी गाय के 1 ग्राम गोबर में लगभग 500 करोड़ जीवाणु होते हैं। जब हम जीवामृत बनाने के लिए 200 लीटर पानी में 10 किलो गोबर डालते हैं तो लगभग 50 लाख करोड़ जीवाणु इस पानी में डालते हैं जीवामृत बनते समय हर 20 मिनट में उनकी संख्या दोगुनी हो जाती है। जीवामृत जब हम 7 दिन तक किण्वन के लिए रखते हैं तो उनकी संख्या अरबों-खरबों हो जाती है। जब हम जीवामृत भूमि में पानी के साथ डालते हैं, तब भूमि में ये सूक्ष्म जीव अपने कार्य में लग जाते हैं तथा पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं।

जीवामृत के प्रयोग से होने वाले लाभ

- 1- जीवामृत पौधे को अधिक टंड और अधिक गर्मी से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।
- 2- फसलों पर इसके प्रयोग से फूलों और फलों में वृद्धि होती है।
- 3- जीवामृत सभी प्रकार की फसलों के लिए लाभकारी है।

a

He



- 4- इसमें कोई भी नुकसान देने वाला तत्व या जीवाणु नहीं है।
- 5- जीवामृत के प्रयोग से उगे फल, सब्जी, अनाज देखने में सुंदर और खाने में अधिक स्वादिष्ट होते हैं।
- 6- पौधों में बिमारियों के प्रति लड़ने की शक्ति बढ़ाता है।
- 7- मिट्टी में से तत्वों को लेने और उपयोग करने की क्षमता बढ़ती है।
- 8- बीज की अंकुरन क्षमता में वृद्धि होती है।
- 9- इससे फसलों और फलों में एकसारता आती है तथा पैदावार में भी वृद्धि होती है।

जीवामृत का लगातार उपयोग भूमि पर क्या असर डालता है?

- 1- जीवामृत के लगातार प्रयोग करने से भूमि में केचुआ और अन्य लाभदायक सूक्ष्म जीव जैसे- शैवाल, कवक, प्रोटोजोआ व बैक्टीरिया इत्यादि में वृद्धि होती है जो पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं।
- 2- भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।
- 3- भूमि के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में भी इसके प्रयोग से सुधार होता है जिससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है।

जीरो बजट का अर्थ है। चाहे कोई भी अन्य फसल हो या बागवानी की फसल हो। उसकी लागत का मूल्य जीरो होगा। मुख्य फसल का लागत मूल्य आंतरवर्तीय फसलों के या मिश्र फसलों के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल बोनस रूप में लेना या आध्यात्मिक कृषि का जीरो बजट है। फसलों को बढ़ने के लिए और उपज लेने के लिए जिन-जिन संसाधनों की आवश्यकता होती है। वे सभी घर में ही उपलब्ध करना, किसी भी हालत में मंडी से या बाजार से खरीदकर नहीं लाना। यही जीरो बजट खेती है।

तरल जीवामृत को कैसे प्रयोग करें?

इस तरल जीवामृत को कई प्रकार से अपने खेतों में प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है फसल में पानी के साथ जीवामृत देना जिस खेत में आप सिंचाई कर रहे हैं उस खेत के लिए पानी ले जाने वाली नाली के ऊपर ड्रम को रखकर वाल्व की सहायता से जीवामृत पानी में डाले धार इतनी रखें कि खेत में पानी लगने के साथ ही ड्रम खाली हो जाए। जीवामृत पानी में मिलकर अपने आप फसलों की जड़ों तक पहुँचेगा। इस प्रकार जीवामृत 21 दिनों के अंतराल पर आप फसलों को दे सकते हैं। इसके अलावा खेत की जुताई के समय भी जीवामृत को मिट्टी पर भी छिड़का जा सकता है। इस तरल जीवामृत का फसलों पर छिड़काव भी कर सकते हैं। फलदार पेड़ों के लिए पेड़ों दोपहर 12 बजे के समय पेड़ों की जो छाया पड़ती है उस छाया के बाहर की कक्षा के पास 1.0-1.5 फुट पर चारों तरफ से नाली बनाकर प्रति पेड़ 2 से 5 लीटर जीवामृत महीने में दो बार पानी के साथ दीजिए। जीवामृत छिड़कते समय भूमि में नमी होनी चाहिए।

जीवामृत का प्रयोग गेहूँ, मक्का, बाजरा, धान, मूंग, उर्द, कपास, सरसों, मिर्च, टमाटर, बैंगन, प्याज, मूली, गाजर आदि फसलों के साथ ही अन्य सभी प्रकार के फलदार पेड़ों में कर सकते हैं। इसका कोई नुकसान नहीं है।

a

AK



Memorandum of Understanding

The Memorandum of Understanding made on this.....day of (Month), (Year) between (name of local body) through its (Competent officer) (here in after called 'First party') which expression shall unless excluded by or repugnant to the context be deemed to include his successor in office and assigns of the one part

AND

..... through (Name of officer of Goshala/Firm/Support Organization etc) (here in after called the 'Second party' which expression shall unless excluded by or repugnant to the context be deemed to include his successor in office and assigns) of the other parts.

WHEREAS, the First Part has developed Temporary Govansh Ashray Sthal at Village Districtof Uttar Pradesh in an area of about acre and inside the said Temporary Govansh Ashray Sthal which has been made operational for keeping cows and its progeny (Cow, Calf, Heifer, Bull and Bullock) also name as Govansh, who are caught and are kept in Temporary Govansh Ashray Sthal.

Whereas, both the parties are agreed that the operation of the Temporary Govansh Ashray Sthal would be under taken by the and as such M.O.U. has to be prepared between the and the

And whereas, the First Party is the absolute owner in possession of the said acre of the land situated in village, District over Khasra Plot/s No.

..... and over the same place has been developed for keeping unsheltered/ uncared govansh (cow and its progeny) therein and provide them timely Food, water, proper Shelter and safety (as package of practice). The Animal Husbandry services will be supported by the nearby Government Veterinary Hospital under supervision of Chief Veterinary Officer.

And whereas, the Second Party is desirous to manage the said on the terms and conditions here in after contained in this memorandum of Understanding.

Now this deed of Memorandum of Understanding witness as follows:

1. That the term of MOU shall commence w.e.f.(DD/MM/YYYY and shall subject to the terms remain in force for a period of years that is upto (DD/MM/YYYY). The First Party can increase the period if it is satisfied with the package of practice of

2. That the shall not sell any cow and its progeny which are at above said place.

a Ae [Signature]

3. That the will keep the details of Cow and its progeny, newcomer govansh, birth and death of govansh provided to the at above said place by the First Party.
4. That the will not fix any limit of the animals sent / deployed by the First Party.
5. That the will allow the officers of the Government or as deputed / nominated / authorized officer to inspect the and if any short coming is found same shall be rectified immediately by
6. That the First Party shall provide very primitive requirement as required to establish Temporary Govansh Ashray Sthal. The Second party will not ask to establish any permanent office accommodation etc. A temporary guard room may be sanctioned to provide rest place for guard and workers of working at
7. That the Electricity, Water, Bhunsa Godown and maintenance would be provided by the First Party at
8. That there are several shades for keeping the cow and its progeny at but if it is found that the same are in-adequate new temporary shades shall be built by the First Party.
9. That out of acre land acre of land would be provided to the for growing green fodder for the animals; but the ownership of the acre land would remain with the First Party. The Green fodder grown would only be utilized for the feeding of Govansh enlisted in , the will not sell fodder to any outsider.
10. That the First Party will provide the iron chains/rassa for chaining/ restraining of govansh , fodder machine etc as decided by District Magistrate.
11. That the Veterinary Doctors and paraveterinary staff services would be provided by the First Party. An office Staff may be appointed by Second Party as supervision to supervise day to day activities. (Second Party) will keep First Aid medicine form own source for prompt relief and over and above will be borne by the First Party.
12. That if the work of is not found satisfactory then the First Party shall have a right to cancel the Memorandum of Understanding by giving one month's notice and the work would be given to any other competent person or Society/Institution. The will have no legal right to claim any damages for the First Party.
13. That if it is found that the is misutilizing the infrastructure, machines, equipments etc. provided by the First Party , the Second Party will be solely responsible for the losses.
14. That the First Party will undertake the maintenance, repairing, white washing, painting of provided to the by the First Party as per this MOU.

a

Ac



FD

15. That the shall ensure that all the prophylactic vaccinations against contagious disease of livestock are given at appropriate time and proper records are kept. The vaccination of the govansh will be done by the Department of Animal Husbandry free of cost.

16. That the will accept all the Cow and its progeny sent by the Local bodies or the Government.

17. All sales proceeds from the disposal of Cow's Milk, dung and urine will be utilized in animal welfare activities.

18. All expenses towards stamp duty etc. on this M.O.U. Deed shall be borne by the Second Party.

19. That the First party shall make the payments for labour and security .

20. That the First Party shall provide the Maintenance items as and when required.

21. Any dispute and difference arising out of or in any way touching or concerning this M.O.U. shall be final by The District Magistrate. However if second party not agreed to accept the decision of the District Magistrate it shall be referred to the Sole Arbitrator the Commissioner of Division,and there shall be no objection to any such appointment. The award of the Arbitrator so appointed shall be final and binding on both the parties.

In witness where of the parties have signed this M.O.U. on the day and the year first above mentioned.

First Party

Second Party

Name
Post
Contact #
e-mail -

Name
Post
Contact #
e-mail -

Witness:

Witness:

1.

1.

2.

2.

a

Al

प्रेषक,

बी०एल० गीना,
प्रमुख सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

1. समस्त अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव, उत्तर प्रदेश शासन।
2. समस्त मण्डलायुक्त, उ०प्र०।
3. समस्त जिलाधिकारी, उ०प्र०।
4. पुलिस महानिदेशक, उ०प्र०, लखनऊ।
5. समस्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक/पुलिस अधीक्षक, उ०प्र०।
6. समस्त नगर आयुक्त, उ०प्र०।
7. निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
8. निदेशक, रोग नियंत्रण एवं प्रक्षेत्र, पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
9. समस्त अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
10. समस्त जिला पंचायत राज अधिकारी, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।
11. समस्त अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत, उ०प्र० (जिलाधिकारी के माध्यम से)।

पशुधन अनुभाग-2

लखनऊ: दिनांक 08 अगस्त, 2019

विषय:-निराश्रित/बेसहारा गोवंश को इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को सुपुर्द किये जाने हेतु "मा० मुख्य मंत्री निराश्रित/बेसहारा गोवंश सहभागिता योजना" का प्रख्यापन।

महोदय,

उत्तर प्रदेश पशुधन संख्या के दृष्टिकोण से देश का सबसे बड़ा प्रदेश है, जहाँ पर 2012 की पशुगणना के अनुसार 205.66 लाख गोवंश हैं। उक्त के अतिरिक्त प्रदेश में 10 से 12 लाख निराश्रित/बेसहारा गोवंश होने का अनुमान है। विभाग द्वारा निराश्रित एवं बेसहारा गोवंश के संरक्षण एवं भरण-पोषण हेतु स्थायी/अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल, वृहद गोसंरक्षण केन्द्र/गोवंश वन्य विहार (बुन्देलखण्ड क्षेत्र में)/पशु आश्रय गृह स्थापित एवं संचालित कर उनका संरक्षण एवं भरण-पोषण किया जा रहा है।

2- सम्प्रति पशुधन विभाग, नगर विकास विभाग, ग्राम विकास विभाग, पंचायती राज विभाग एवं जिला प्रशासन के सहयोग से निराश्रित/बेसहारा गोवंश संरक्षण, संवर्द्धन विषयक निर्गत शासनादेश संख्या-4324/सैतीस-2-2018-5(53)/2018, दिनांक-02.01.2019 एवं शासनादेश संख्या-261/सैतीस-2-2019-5(53)/2018, दिनांक-28.01.2019 के क्रम में प्रदेश में निराश्रित/बेसहारा गोवंश आश्रय स्थल, कान्हा उपवन, कांजी हाऊस, कान्हा आश्रय एवं वृहद गोसंरक्षण केन्द्र स्थापित एवं संचालित हैं। दिनांक-24.07.2019 तक प्रदेश में 4033 अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल, 150 वृहद गो संरक्षण केन्द्र, कान्हा गोशाला 130 एवं कांजी हाऊस 393 में 2,74,691 गोवंश संरक्षित

हैं।

3- इसके अतिरिक्त प्रदेश में पंजीकृत गोशालाओं की संख्या 523 है। उक्त पंजीकृत गोशालाओं को राज्य सरकार द्वारा कुल संरक्षित गोवंश की संख्या के 70 प्रतिशत की संख्या को आधार मान कर रू0 30/- प्रति गोवंश 365 दिनों के लिए प्रदान किया जा रहा है। यह संज्ञान में आया है कि स्थायी/अस्थायी गो आश्रय स्थलों में संरक्षित निराश्रित गोवंश की आश्रय स्थलों में अधिक संख्या में होने के कारण उनके रख-रखाव में असुविधा हो रही है जिसके दृष्टिगत एक ऐसी योजना प्रख्यापित किये जाने की आवश्यकता है जिससे कि निराश्रित/बेसहारा गोवंश का संरक्षण/भरण-पोषण में सामाजिक सहभागिता बढ़ायी जाय व ऐसे व्यक्ति जो निराश्रित/बेसहारा गोवंश के भरण-पोषण, संरक्षण एवं संवर्द्धन के इच्छुक हैं उन्हें जिला प्रशासन के माध्यम से चिन्हित कर निराश्रित/बेसहारा गोवंश सुपुर्द किया जा सके।

4- निराश्रित/बेसहारा गोवंश को पूर्णरूप से संरक्षण भरण-पोषण प्रदान किया जाना सरकार की प्राथमिकताओं में एक है। इसको दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तावित है कि वर्तमान में व भविष्य में जिला प्रशासन द्वारा स्थापित एवं संचालित विभिन्न प्रकार के गोवंश आश्रय स्थलों में संरक्षित निराश्रित/बेसहारा गोवंश को स्थापित प्रक्रिया द्वारा इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को सुपुर्द करते हुए इस योजना के क्रियान्वयन में जन सहभागिता बढ़ायी जाये।

5- अतएव स्थायी/अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल, वृहद गोसंरक्षण केन्द्र/गोवंश वन्य विहार (बुन्देलखण्ड क्षेत्र में)/पशु आश्रय गृह में संरक्षित गोवंश को सम्बन्धित जिलाधिकारी के निर्देशन में चिन्हित किये गये ऐसे इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को सुपुर्द किए जाने की निम्नवत् योजना प्रख्यापित की जा रही है:-

5(1) नीति विषयक शासनादेश संख्या-4324/सैंतीस-2-2018-5(53)/2018, दिनांक-02.01.2019 के प्रस्तर-7.8 के संलग्नक-1 एवं शासनादेश संख्या-261/ सैंतीस-2-2019-5(53)/2018, दिनांक-28.01.2019 निराश्रित/बेसहारा गोवंश आश्रय स्थल विषयक परामर्शी मार्गनिर्देशों के प्रस्तर-5 में गोवंश को किसानों/पशुपालकों को सुपुर्दगी किये जाने का उल्लेख है।

5(2) जिलाधिकारी जनपद में ऐसे इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को चिन्हित करायेंगे जो निराश्रित गोवंश को पालने हेतु तैयार हैं। ऐसे इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को जिलाधिकारी द्वारा रू0 30/- (रू0 तीस मात्र) प्रति गोवंश/प्रतिदिन की दर से भरण-पोषण हेतु धनराशि सम्बन्धित कृषक/पशुपालक/ अन्य व्यक्ति के बैंक खाते में प्रतिमाह डी0बी0टी0 प्रक्रिया द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी।

- 5(3) निराश्रित/बेसहारा गोवंश (जिनमें इयर टैग अनिवार्य होगा) को इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को सरकार/जिला प्रशासन द्वारा स्थापित एवं संचालित अस्थायी/स्थायी केन्द्रों के माध्यम से सुपुर्द किया जायेगा।
- 5(4) सरकार द्वारा संचालित अस्थायी/स्थायी केन्द्रों से सुपुर्द किए गये गोवंश से सम्बन्धित अभिलेखीकरण की कार्यवाही सम्बन्धित जिलाधिकारी द्वारा स्थानीय समिति (यथा-ग्राम पंचायत, विकासखण्ड, तहसील, जनपद स्तर) के माध्यम से करायी जायेगी एवं स्थानीय समिति प्रगति से सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारी/उप-जिलाधिकारी को समय से अवगत करायेगी।
- 5(5) चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति सुपुर्द किए गये गोवंश को किसी भी दशा में विक्रय नहीं करेगा न ही छुट्टा छोड़ेगा।
- 5(6) प्रश्नगत योजना के क्रियान्वयन हेतु प्रथम चरण में 01 लाख गोवंश को सुपुर्द किया जाना है।
- 5(7) इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों का चयन शासनादेश संख्या-4324/सैतीस-2-2018-5(53)/2018, दिनांक-02.01.2019 के प्रस्तर-7.8 के अनुसार गठित विकास खण्ड स्तरीय समिति की संस्तुति के क्रम में जनपद स्तरीय समिति के अनुमोदनोपरान्त किया जायेगा।
- 6(1) कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार-**
- (क) कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार हेतु स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों जिसका/जिनका व्यापक प्रसार एवं जनपद में अधिक पढ़ा जाता हो, में जिलाधिकारी द्वारा विज्ञापन प्रकाशित कराया जाय।
- (ख) प्रत्येक ग्राम सभा, बी0डी0सी0 एवं पंचायतों की खुली बैठक के एजेण्डा बिन्दु में निश्चित रूप से सम्मिलित करते हुए प्रचार-प्रसार पर विशेष बल देने का दायित्व पंचायती राज विभाग का होगा।
- (ग) जनपद के प्रत्येक कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर जन-मानस को जानकारी हेतु चस्पा किया जाय।
- (घ) प्रत्येक गोष्ठी, पशु बाजारों, मेलों तथा विकास खण्ड तथा मण्डल स्तरीय पं0 दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविरों में प्रचारित एवं प्रसारित किया जाय।
- (ङ) रेडियो, एफ0एम0 चैनल तथा स्थानीय टेली मीडिया पर प्रचारित-प्रसारित किया जाय।
- (च) अन्य प्रचार माध्यम जो उपलब्ध हो का भी प्रयोग किया जाय।
- (छ) प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व सम्बन्धित जनपद के जनपद स्तरीय समिति का होगा।
- 6(2) कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति के चयन हेतु मापदण्ड/मानक**
- (क) इच्छुक कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति सम्बन्धित विकास खण्ड का मूल निवासी हो तथा वर्तमान में निवास कर रहा हो।
- (ख) इच्छुक कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति पशुओं का पालन-पोषण पूर्व से कर रहा हो, को प्राथमिकता दिया जाना।

- (ग) इच्छुक कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति को अधिकतम चार गोवंश ही दिया जाना जिसमें नववत्सों की गणना नहीं किया जाना अर्थात् मादा गोवंश + दूध पीता बछिया व बछड़ा को एक माना जाय।
- (घ) चिन्हित किए जाने वाले इच्छुक कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति के नाम से आवेदन की तिथि को किसी राष्ट्रीयकृत/शेड्यूल बैंक में आधार लिंक क्रियाशील बचत खाता हो।
- (ङ) दुग्ध समितियों से जुड़े कृषक/पशुपालक को प्राथमिकता दी जाय।
- (च) पशुपालन विभाग/उ0प्र0 पशुधन विकास परिषद द्वारा प्रशिक्षित पैरावेट्स/पशुमित्र को प्राथमिकता दी जाय।
- (छ) चयन हेतु निर्धारित प्रारूप (संलग्न) पर कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति को आवेदन करना होगा।
- (ज) यह सत्यापित किया जाना सुनिश्चित किया जाय कि निराश्रित/बेसहारा गोवंश को पालने वाले इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों के पास पर्याप्त स्थान है।
- (झ) सम्बन्धित जिलाधिकारी एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी द्वारा 03 माह में एक बार निराश्रित/बेसहारा गोवंश को पालने वाले कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों का सत्यापन कराया जायगा।

6(3) अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल से गोवंश इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों को दिये जाने की दशा में निम्न अमिलेखों की आवश्यकता होगी:-

- पहचान पत्र- आधार कार्ड/वोटर आई0डी0/राशन कार्ड ।
- बैंक पासबुक की छाया प्रति, जिसमें खाताधारक एवं बैंक का पूर्ण पठनीय विवरण अंकित हो।

6(4) अपनाये गये गोवंश को चिन्हित कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों द्वारा किसी भी दशा में विक्रय या स्थानापन्न नहीं किया जायेगा, इसके अनुश्रवण की जिम्मेदारी सम्बन्धित लेखपाल/पंचायत सचिव/ग्राम पंचायत अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी/पशुधन प्रसार अधिकारी की होगी।

7- चिन्हित कृषक/पशुपालक गोवंश को भरण-पोषण के सापेक्ष भुगतान:-

- (क) प्रति पशु प्रतिदिन रू0 30/- (रू0 तीस मात्र) की दर से शासन द्वारा समय-समय पर निर्गत शासनादेशों के अनुरूप धनराशि देय होगी।
- (ख) चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति द्वारा उपलब्ध कराये गये बैंक खाते में जिलाधिकारी के निर्देशानुसार प्रत्येक माह धनराशि हस्तान्तरित की जायेगी एवं इसकी प्रगति की समीक्षा जनपद स्तरीय समिति द्वारा की जायेगी।
- (ग) भरण-पोषण हेतु धनराशि के ससमय हस्तान्तरण/भुगतान का उत्तरदायित्व सम्बन्धित जिलाधिकारी द्वारा नामित अधिकारी का होगा।

8- चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति को सुपुर्दगी में दिये गये गोवंश की मृत्यु होने पर सम्बन्धित ग्राम प्रधान की उपस्थिति में नियमानुसार गोवंश का पंचनामा किया जायेगा। पशु की मृत्यु के सापेक्ष किसी संदेह/विवाद की अवस्था में स्थानीय

पशुचिकित्सक एवं समीप के पशुचिकित्सक के दूसरे पशुचिकित्सक (संयुक्त रूप से) द्वारा निःशुल्क शवविच्छेदन (शवविच्छेदन हेतु निर्धारित लेवी से मुक्त) किया जायेगा।

9- शव का निस्तारण सम्बन्धित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति द्वारा स्वयं के संसाधन से एवं तकनीकी सलाह से ही किया जायेगा।

10- यदि चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति द्वारा अपनाये गये गोवंश की मृत्यु होने पर उसके द्वारा पुनः गोवंश की मांग की जाती है तो शासनादेश संख्या-4324/सैतीस-2-2018-5(53)/2018, दिनांक-02.01.2019 द्वारा गठित विकासखण्ड समिति की संस्तुति पर जनपद स्तरीय समिति का निर्णय सर्वमान्य होगा।

11- चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति द्वारा अपनाये गये गोवंश की मृत्यु अथवा किसी भी विवाद/पशु चोरी से सम्बन्धित किसी वाद पर जिलाधिकारी द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम होगा।

12- सुपुर्दगी में दिये गये गोवंश के भरण-पोषण हेतु चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति को हस्तान्तरित धनराशि का लेखा-जोखा पृथक से रखा जायेगा।

12(1) इस प्रयोजन हेतु उपयोग किये गये बैंक खातों का आन्तरिक सम्प्रेक्षा एवं वाह्य सम्प्रेक्षा स्थानीय निधि लेखा परीक्षा विभाग द्वारा किया जायेगा।

12(2) जनपद स्तरीय खातों का सम्प्रेक्षण स्थानीय निधि लेखा परीक्षा विभाग से concurrent आडिट/कन्करन्ट सम्प्रेक्षण किया जायेगा।

13- भविष्य में योजना में किसी प्रकार के परिमार्जन/संशोधन की आवश्यकता होने पर अन्तिम निर्णय लेने हेतु मा० मुख्यमंत्री जी अधिकृत होंगे।

14- उक्त योजना में प्राविधानित व्यवस्था तत्काल प्रभाव से लागू की जाय।

15- इस सम्बन्ध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि समस्त उत्तर प्रदेश में उपरोक्त योजना के अनुसार क्रियान्वयन करने हेतु अग्रेतर आवश्यक कार्यवाही शीर्षस्थ प्राथमिकता पर सुनिश्चित की जाय।

संलग्नक:यथोक्त।

भवदीय,

(बी० एल० मीना)
प्रमुख सचिव।

संख्या-3258(1)/सैतीस-2-2019तददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. निजी सचिव, मा० पशुधन मंत्री जी, उ०प्र० शासन।
2. निजी सचिव, मा० पशुधन राज्य मंत्री जी, उ०प्र० शासन।
3. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, उ०प्र० पशुधन विकास परिषद, बादशाहबाग, लखनऊ।
4. वित्त नियंत्रक/संयुक्त निदेशक, गोधन/संयुक्त निदेशक, नियोजन, पशुपालन विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।
5. समस्त उप निदेशक/मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, पशुपालन विभाग, उ०प्र०।
6. गार्ड फाइल।

आज्ञा से,

(बी० एल० मीना)
प्रमुख सचिव।

निराश्रित/बसेहारा गोवंश के भरण-पोषण हेतु
इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों के चयन हेतु आवेदन का प्रारूप

1433

क्रमांक	मद	विवरण
1	इच्छुक कृषकों/पशुपालकों/अन्य व्यक्तियों का फोटोग्राफ	आवेदक का अधुनान्त पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो-चस्पा करें जो ग्राम प्रधान द्वारा अभिप्रमाणित हो
2	नाम (जैसा पहचान पत्र में हो)	
3	पिता/पति का नाम	
4	पता	
5	आधार संख्या (छाया प्रति संलग्न करें)	
6	वोटर आईडी0 (छाया प्रति संलग्न करें)	
7	बचत बैंक खाते का विवरण (छाया प्रति संलग्न करें)	बैंक का नाम शाखा का नाम खाता संख्या आई0एफ0एस0सी0
8	परिवार का विवरण (कुटुम्ब रजिस्टर/अद्यतन राशन कार्ड के अनुसार (छाया प्रति संलग्न करें)	
9	गोवंश की वांछित संख्या (1/2/3/4 संख्या अंकित करें)	

प्रमाणित किया जाता है कि:-

- उपरोक्त सूचनाए सत्य हैं।
- कोई सूचना छिपाई नहीं गयी है।
- किसी प्रकार की गलत सूचना के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार होऊँगा।
- गोवंश को अपनाये जाने हेतु समस्त शर्तों/प्रतिबन्धों/दशायें मुझे स्वीकार हैं।
- अपनाये गये गोवंश को बेचूँगा नहीं तथा किसी भी प्रकार की पशु क्रूरता नहीं करूँगा।

हस्ताक्षर इच्छुक कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.....जिनका विवरण ऊपर उल्लिखित है को जानता व पहचानता हूँ तथा ग्राम सभा.....निवासी है एवं ग्राम में परिवार के साथ (सदस्य संख्या.....) निवास करते हैं। इनको अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल से गोवंश दिए जाने हेतु संस्तुति करता/करती हूँ।

हस्ताक्षर ग्राम प्रधान मुहर सहित

1234
निराश्रित/बेसहारा गोवंश के भरण-पोषण हेतु
चिन्हित कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति को अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल
से गोवंश की सुपुर्दगी का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती
पुत्र/पुत्री/पति/पत्नी श्री/श्रीमति निवासी
.....को अस्थायी गोवंश आश्रय
स्थल
विकास खण्ड तहसील जनपद से आज
दिनांक दिन को एक/दो/तीन/चार जिसका विवरण
निम्नवत् है को एतद्वारा निर्धारित प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित करते हुए भरण-पोषण हेतु सुपुर्द
किया जाता है:-

क्र.स.	मद	गोवंश संख्यावार विवरण			
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
1	टैग नम्बर				
2	प्रजाति				
3	उम्र				
4	लिंग				
5	रंग				
6	सींग				
7	दूध/सूखी (दुधारू गोवंश के संबन्ध में)				
8	दूध में है तो साथ संतति मादा/नर				

हस्ताक्षर कृषक/पशुपालक/अन्य व्यक्ति

हस्ताक्षर ग्राम प्रधान/अधिकासी अधिकारी/नगर आयुक्त द्वारा नामित
अधिकारी